इंगलैंड-यात्रा

(Approved by the High School Board of U. P. as a supplementary Hindi Reader for class VII of A. V. Schools)

रामचंद्र शर्मा, बी० ए०

इंगलैंड-यात्रा

लेखक—
रामचन्द्र शर्म्मा, बी० ए०

भूमिका-लेखक
डाक्टर प्राणनाथ डी० एस० सी० (लंडन)
पी० एच्० डी० (वियेना), अर्थशास्त्र के प्रोफेसर
हिन्दू विश्व-विद्यालय

प्रकाशक—
एज्यूकेशनल पब्लिशिंग हाउस
बनारस

तृतीय बार] १९४१ [मूल्य ।=)

मुद्रकः—

रामेश्वर पाठक

तारा यन्त्रालय, कमच्छा, बनारस ।

प्राक्कथन

विदेश-यात्रा के लाभ बहुत ही अधिक हैं। फ्रेडरिक लिस्ट ने एक स्थान पर लिखा है कि "जब मैंने अमेरिका की यात्रा की—वहाँ पहुँचने पर मैंने अपनी सब किताबें दूर फेंक दीं। वह मुझको भ्रान्ति में ही डालतीं। अर्थशास्त्र पर सबसे उत्तम ग्रन्थ यही है कि नई भूमि में नये जीवन को अपनी आँखों से देखा जाय।" जब १९१३ में पहली बार मैं योरुप गया, उपरिलिखित उक्ति की सचाई का ज्ञान मुझको पूर्ण रूप से हुआ।

हमारे देश के अधःपतन का एक मुख्य कारण यह भी है कि हमलोग कूपमण्डूक हो गये। पाश्चात्य देश राजनैतिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में उन्नति करता गया और हमलोग जहाँ के तहाँ ही बने रहे। जो कुछ हमारे जीवन में सौन्दर्य था, हमारे साहित्य में उच्च भाव थे, वह सबके सब विदेशी यात्रियों ने अपने देशों में पहुँचा दिये। पञ्चतन्त्र तथा गीता के योरुप की भिन्न २ भाषाओं में अनुवाद हो गये। शकुन्तला का अनुवाद जर्मन में हुआ और गोयथे के दिल में प्रबल उद्गारों का एक कारण बना।

अभाग्य का वश है कि अभी तक हमलोग पुराने ढङ्ग के विचारों से स्वतन्त्र नहीं हुए हैं। अपने जीवन तथा रहन-सहन को अभी तक हम लोग आदर्श समझते हैं जब कि संसार इस क्षेत्र में बहुत सीमा तक आगे बढ़ गया है। व्यवहार को सामने रखा जाय तो इङ्गलैण्ड अपना तुल्य नहीं रखता। पुलिस से लेकर उच्च कर्मचारी तक नम्रता तथा सद्व्यवहार का नमूना है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ

देवता रहते हैं—यह भगवान् मनु का वाक्य इङ्गलैण्ड के कोने-कोने में कार्य-रूप में परिणत दिखाई पड़ता है।

हमारे प्राचीन लोग स्वच्छता पर बड़ा ध्यान देते थे। हमारे जीवन में स्वच्छता का जो कुछ अंश है वह पूर्वजों के विचारों तथा निर्द्धारित नियमों का परिणाम है। जब मैं पहिले पहिल इङ्गलैण्ड गया, आंग्लों की स्वच्छता पर अचम्भित हो गया। खाने के स्थानों, रहने के मकानों तथा अन्य स्थानों पर मक्खियों का पता तक नहीं चलता। सोने के समय न मच्छर का सामना करना पड़ता है और न पिस्सुओं का। सड़कें साफ-सुथरी हैं। गरीब-से-गरीब लोगों के मकान हमारे देश के मध्य श्रेणी के लोगों से उत्तम हैं। सभी लोगों का रहन-सहन भारत की दृष्टि से उच्च कोटि का है।

भारत की उन्नति के जहाँ बहुत से मार्ग हैं उनमें विदेशयात्रा को गौण स्थान नहीं दिया जा सकता। इङ्गलैण्ड का हम लोगों से सम्बन्ध घनिष्ट है। अतः हमारे देश के बालकों के लिये यह आवश्यक है कि वह कम-से-कम उस देश का वृत्तान्त अवश्य ही पढ़ें। बचपन में बालक जो कुछ पढ़ते हैं उसका संस्कार देर तक बना रहता है। इसी उद्देश्य से इस यात्रा को प्रकाशित किया गया है। इससे बालकों में इङ्गलैण्ड के प्रति ज्ञान बढ़ेगा—विदेशयात्रा के लिए उत्कट इच्छा पैदा होगी। उनमें से यदि हजार पीछे एक भी इङ्गलैण्ड पहुँचा तो देश का बड़ा कल्याण होगा।

प्राणनाथ

बनारस-विश्वविद्यालय
७ अक्टूबर १९३३

डी.एस.सी (लंडन) पी.एच्.डी. वियेना,
अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, (हिन्दू-विश्व-विद्यालय)

वक्तव्य

नीतिशास्त्र के अनुसार ज्ञानोपार्जन के तीन मुख्य साधन हैं स्वाध्याय, सत्संग और देशाटन। देशाटन से ही वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है; क्योंकि प्रत्यक्ष दर्शन और अनुभव का सुअवसर मिलता है। हमारे देश के अधिकांश लोग, निर्धनता अथवा द्रव्याभाव के कारण, ज्ञानार्जन के इस प्रमुख साधन का उपयोग नहीं कर पाते। इसलिए यहाँ के लोगों में देशाटन-सम्बन्धी पुस्तकों के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। इससे दो लाभ होंगे—एक तो उनके मन में देशाटन के लिए अभिरुचि उत्पन्न होगी, दूसरे वे भिन्न-भिन्न देशों के अद्भुत एवं चित्ताकर्षक वर्णन पढ़कर देशाटन करने में प्रवृत्त होंगे। आशा है, इस पुस्तक से दोनों उद्देश्य सिद्ध होंगे।

वर्त्तमान समय में इङ्गलैण्ड से भारत का घना सम्बन्ध है। हमारे देश के प्रत्येक जिज्ञासु विद्यार्थी को इङ्गलैण्ड के विषय में पूरी जानकारी रखने की आवश्यकता है। यह पुस्तक इङ्गलैण्ड से सम्बन्ध रखनेवाली प्रत्येक ज्ञातव्य विषय पर प्रकाश डालती है। विश्वास है, विद्यार्थियों के लिए यह विशेष उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के तैयार करने में श्रीदेवनाथसिंह गौतम 'विशारद' ने बड़ी सहायता दी है। तदर्थ उन्हें अनेक धन्यवाद।

निवेदक—

रामचन्द्र शर्मा (बी० ए०)

सूचीपत्र

—:#:—

इंग्लैंड-यात्रा

पहला दृश्य

यात्रा-पथ

पूर्व के देशों से इंग्लैण्ड जाने के दो मार्ग हैं। पहला जल-मार्ग, दूसरा स्थल-मार्ग।

मान लीजिए कि आपको बम्बई से इंग्लैण्ड जाना है, तो आप जहाज पर सवार होकर बम्बई से अदन, स्वेज-नहर, जिब्राल्टर होते हुए यूरप के पश्चिमी किनारे-किनारे इंग्लैण्ड चले जाइये, या स्वेज-नहर के सिकन्दराबाद से फ्रान्स के दक्षिणी बन्दरगाह मार्सेलीज पहुँच जाइये। आप वहाँ से मार्सेलीज-पेरिस-रेलवे से एक दिन में फ्रान्स के उत्तरी बन्दरगाह 'कैले' में पहुँच जाइयेगा। यहाँ एक चैनेल स्टीमर मिलेगी जो करीब पचास मिनट में डोवर-जलडमरूमध्य पार करा देगी। आकाश निर्मल रहने पर फ्रान्स के उत्तरी किनारे से ही इंग्लैण्ड के टीले दिखाई देने लगते हैं। जोरों की हवा रहने पर अशान्त सागर में यात्रा करना भयावना प्रतीत होता है।

दूसरा मार्ग बम्बई से बसरा तक जल-मार्ग और बसरा से स्मरना तक रेल-मार्ग है, जो स्मरना से कुस्तुन्तुनिया, बेलीग्रेड, वियना होते हुए कैले तक पहुँचता है। यदि यहाँ से जलडमरूमध्य पार करते समय स्वच्छ आकाश, शान्त समुद्र और सूर्य का प्रकाश हो, तो इंग्लैण्ड के श्वेत वर्ण के टीलों और पहाड़ों को चारों ओर से घेरे हुए हरे-भरे मैदान दिखाई पड़ेंगे। यहाँ की हवा ठण्ढी और मन प्रसन्न करनेवाली होती है। समुद्र का नीला जल देखकर बड़ा ही आनन्द प्राप्त होता है। ट्रेनों के सदा चलते रहने से धूल अधिक उड़ती है। इसलिए प्रत्येक वस्तु का स्वच्छ दिखाई देना कौतूहल-वर्धक है।

बड़े बन्दरगाह में जाने पर—जहाँ हर तरह के जहाज आँधी से सुरक्षित रहने के लिए खड़े रहते हैं—ब्रिटिश नौ-सेना के अनेक जहाज लंगर डाले दिखाई देते हैं। उन्हें देख हमें इस बात का स्मरण हो आता है कि जिस प्रकार दुनिया के और सब देश अपने शत्रुओं से रक्षा के लिए अपने सीमान्त प्रदेशों में पल्टनें रखते हैं, उसी प्रकार इंग्लैण्ड भी अपने युद्ध-जलयानों पर ही निर्भर रहता है। बन्दरगाह पर पहाड़ियाँ हैं जिनके ऊपर गढ़ और सैनिकों के अड्डे बने हुए हैं। आपको यहाँ पर रखी हुई बड़ी-बड़ी बन्दूकें और तोपें मिलेंगी जो आकस्मिक युद्ध के लिए सदा प्रस्तुत रहती हैं। यहाँ पर आपके दाहिनी ओर एक बहुत पुराना गढ़ दिखाई देगा। यह डोवर का किला है जो पहाड़ी पर बना है। यहाँ पर रोमवाले गौल से आये थे। उन लोगों ने एक धरहरा और अपने रहने के लिए एक

महल बनवाया था, जो तब से आज तक अधिकाधिक सुदृढ़ ही बनाये जा रहे हैं। डोवर के किले से आपके बाईं ओर 'शेक्सपीयर का क्लीफ' है। यह बन्दरगाह से दक्षिण-पश्चिम कोने पर पड़ेगा।

गत कई शताब्दियों से डोवर इंग्लैण्ड के मित्रों और शत्रुओं के आने का मार्ग रहता आया है। इतिहास में इसके अनेक प्रमाण हैं। सन् १४१६ में डोवर के किले के कान्स्टेबुल—ग्लाउसेस्टर के ड्यूक हैम्फ्रे—की राजराजेश्वर सिजिसमण्ड से भेंट हुई थी। उसने कहा—'आप यहीं ठहरिये; मैं जाकर सम्राट् से प्रवेश-पत्र लाता हूँ। यदि स्वीकार हुआ, तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इंग्लैण्ड में आप पर किसी प्रकार का संकट नहीं आने पायेगा।' यह कहकर वह हाथ में तलवार ले समुद्र-पार चला गया। यह फ्रान्सीसी सम्राट् था। इस प्रकार फ्रान्सीसियों ने इस पर अनेक बार आक्रमण किये हैं। जब अंग्रेजी बेड़ा किनारे के दूसरे भाग में कुछ दूर पर रहने लगा, तभी शान्ति हुई। ग्रेट अरमाडा के आक्रमण के समय वहाँ के सभी निवासी टीले पर खड़े खड़े थरथर काँप रहे थे। वे चैनेल में, ड्रेक की अध्यक्षता में, अंग्रेज और स्पैनिश जहाजी बेड़ों की करतूत देख रहे थे। प्रसिद्ध इतिहासज्ञों का कथन है कि, 'डोवर और कैले के बीच में इस दिन जैसा दृश्य दिखाई दिया, वैसा जब से इङ्गलैण्ड आँग्लदेश हुआ, तब से कभी दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। इस नीची, रेतीली भूमि में कैले के संरक्षक स्पैनिशों के जहाज

खड़े थे। उनकी संख्या एक सौ तीस थी। वे संसार में सबसे अधिक और सुसज्जित और संगठित थे। उनके विपक्ष में अंग्रेजों का एक सौ पचास का एक छोटा जहाजी बेड़ा था। उसमें इंग्लैण्ड के सभी बहादुर जुटे हुए थे। अध्यक्ष उत्साही थे।" पर अंग्रेजों के सौभाग्य से उनकी सेना ने ही बड़ी स्पैनिश सेना को तितर-बितर कर दिया।

डोवर इंग्लैण्ड के साहित्य और इतिहास का स्मारक है। हम ज्यों-ज्यों इंग्लैण्ड के भीतर प्रवेश करते हैं; त्यों-त्यों भूत और वर्तमान का सामञ्जस्य पाते हैं। इंग्लैण्ड की प्राचीन घटनाओं के जाने बिना हम इंग्लैण्ड की वर्तमान दशा और उसके साहित्यमर्मज्ञों की भावनाएँ नहीं समझ सकते; क्योंकि इंग्लैण्ड ही एक ऐसा देश है जहाँ संसार में सब से अधिक ऐतिहासिक स्मृतियां और रीति-रस्म हैं। वहाँ के कवियों में यह विचित्रता है कि उन्होंने अपनी परिस्थितियों और निवास-स्थानों के विषय में गहरी छानबीन की है। अतएव वहाँ की प्राकृतिक दशा जान लेने के बाद हम आँग्ल-साहित्य के विचार और भाव को सरलता से समझ सकते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि धनाभाव के कारण हम देशाटन नहीं कर सकते। ऐसी दशा में संसार के भिन्न-भिन्न भागों का वर्णन पढ़कर ही सन्तोष कर लेते हैं। इस प्रकार हम अपने प्रान्त के विषय में तो कम जानते हैं, परन्तु संसार के बड़े-बड़े भागों का पोथा रटकर पण्डित बन जाते हैं।

जब स्टीमर अपने अन्तिम स्थान पर पहुँच जाती है तब

वहाँ माल उतार कर—वहीं प्रतीक्षा करती हुई—गाड़ी पर चढ़ाया जाता है। यह काम बड़ी शीघ्रता से होता है। वहाँ से गाड़ी डोवर बन्दरगाह से कोलाहल पूर्ण नगरों और सुरङ्गों से होती हुई मैदान की ओर दौड़ने लगती है। वह कभी लाल-लाल फूलों वाले हरे भागों से होकर जाती है, और कभी ऐसे चरागाहों या हरे-भरे खेतों के पास से होकर जो झाड़ियों या तार से घिरे होते हैं। कहीं घाटियों में किसानों के घर दिखाई पड़ते हैं; कहीं लम्बे-लम्बे पेड़ों के बीच में बनी हुई सड़कों पर दृष्टि पड़ती है, जहाँ झुण्ड के झुण्ड किसान खेतों से घोड़े हाँकते आते रहते हैं। इसी समय ऐसे घने जंगल में पहुँचते हैं जहाँ की घनी पत्तियों के बीच से होकर सूर्य की तिरछी किरणें नीचे तक चली आती हैं, जहाँ रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं। वहां से गाड़ी सुरंगों को पार करती हुई एक देहाती स्टेशन पर आ धमकती है। यहाँ देहाती लोग प्लैटफार्म पर इकट्ठे दिखाई पड़ते हैं। लन्दन भेजने के लिए दूध के सामान पार्सल किये जाते हैं। वहाँ की जमीन बिलकुल समतल या चौड़ी नहीं है; खेत छोटे होते हैं जिनके चारों ओर झाड़ियाँ लगी रहती हैं। सड़कें अच्छी होती हैं। सड़कें और पगडण्डियाँ गाँव-गाँव को मिलाती हैं। हर-एक गाँव में या उसके आसपास एक गिरजाघर जरूर होता है। इसका गुम्बज दूर से ही दिखाई देता है। इसमें घण्टे टँगे रहते हैं जिनकी टनटनाहट सुनकर सभी ईश-प्रार्थना के लिए आ उपस्थित होते हैं। प्राचीन काल में पुजारी के साथ-साथ

एक पहरेदार भी रहता था जो लड़ाई की सूचना देता था।

अब हमलोग केण्ट के काउण्टी से होकर लन्दन चल रहे हैं। यह बहुत धनी देश है। इस कारण इसको 'आँग्लदेश की फुलवाड़ी' कहते हैं। घाटियों में उपजाऊ चरागाह हैं। वसन्त में मेवे, नासपाती के पेड़ लहलहाते दिखाई पड़ते हैं। अनाज, तरकारी और दूब के खेत अधिक हैं। फल के पेड़ों की संख्या अधिक है। अंगूर की अनेक लताएँ लगाई जाती हैं। इस प्रान्त में बीअर की शराब बनती है।

हमारी गाड़ी शान्त स्थानों से होती हुई दनदनाती चल रही है। चरते हुए जानवर शायद ही—भारत में चौंककर—गाड़ी की ओर देखते हैं। जिस समय वहाँ के मजदूर काम करते रहते हैं, यदि उस समय कोई गाड़ी जाती है, तो वे काम बन्द करके खड़े हो जाते हैं और हाथ उठा लेते हैं, मानों स्वागत कर रहे हैं। लन्दन के पास पहुँचते ही हरे खेत और सुनसान सड़कें लुप्त हो जाती हैं। दूकान और कार्यालय चारों ओर दिखाई पड़ने लगते हैं। मोटर, गाड़ी और आदमी सभी शोर मचाते हुए हवा से लड़ते फिरते हैं। चैरिङ्ग-क्रास अभी दूर है। मजदूरी करने वालों के रहने के लिए लन्दन में पर्याप्त स्थान नहीं है। इसलिए अधिकांश मजदूर यहीं पर रहते हैं। यहाँ कार्यालय, स्कूल, अस्पताल, सैकड़ों मकान और चिमनियाँ और सड़कें हैं। आपको सभी जगह जाने के लिए रेलवे की लाइनें मिल सकती हैं जिनके किनारे तार लगे हुए हैं। घरों की चोटी पर

टेलीग्राफ के तार लगे रहते हैं। विज्ञापन चिपकाने का अधिक प्रचार है। हमारी गाड़ी कभी पुल पर, कभी सुरंग में, कभी सड़क पर, कभी सड़क के नीचे होकर चक्कर काटती चल रही है। ईंट से बने हुए मकान गन्दे पड़ गए हैं। शोरगुल मचा हुआ है। सभी जगह धुआँ और काजल दिखलाई देता है। इन्हें देखते-देखते हम तंग आ जाते हैं; परन्तु इनका जीवन-रहस्य सोचने से प्रसन्नता मालूम होती है। यह प्रसन्नता ही मनुष्यता के नाते उन्हें सान्त्वना देती है।

लन्दन क्या ही आश्चर्य-जनक है! वह ब्रिटिश साम्राज्य का केन्द्र है! और है आँग्लदेश का कलेजा! अधिक क्या कहें वह बीसवीं शताब्दि के स्वर्ग की इन्द्रपुरी है।

लन्दन ऐसा शहर है जहाँ दुनियाँ भर के भाषा-भाषी मिल सकते हैं। इसलिए यह किसी के लिए भी अन्य विदेशीय शहरों की तरह अनजान शहर नहीं है। संसार के प्रायः सभी भागों में अंग्रेजों का अधिकार है। यह इंगलैण्ड ही का नहीं, वरन् संसार का शहर है। इसलिए लन्दन से सभी देशों के आयात-निर्यात का सम्बन्ध है। यह सभी प्रकार के ज्ञान का भण्डार है।

हमारी यात्रा टेम्स नदी पर समाप्त होती है। पुल के नीचे काला जल बहता है। अनेक जहाज घाट पर अपना माल चढ़ा रहे हैं और बहुत-से उतार रहे हैं। हमारे सामने हमारे दाहिनी ओर बहुत विशाल भोजनालय बने हुए हैं। बाईं ओर पार्लमेण्ट के दोनों भवन हैं। फिर हम एक शीशे की छत के

अन्दर पहुँचते हैं जहाँ धुएँ की अधिकता है। यह 'चैरिङ्ग-क्रास' स्टेशन है। एक कुली हमारा सामान उठा कर बाहर पहुँचा देता है। आवश्यकता पड़ने पर चुंगी देकर भाड़े की मोटर पर सवार हो हम किसी भोजनालय या धर्मशाला की ओर पधारते हैं।

दूसरा दृश्य

लन्दन

लन्दन की महत्ता इतने ही से समझ में आ जायेगी कि यह उस ग्रेट ब्रिटेन और ब्रिटिश साम्राज्य का केन्द्र है जिसका प्रभाव संसार भर में फैला हुआ है या लगभग संसार के प्रत्येक भाग से जो सम्बद्ध है। आजकल व्यापार का युग है। इसलिए यह संसार के देशों तथा व्यापारों दोनों का केन्द्र बन गया है। दुनिया के सभी भागों के मनुष्य यहाँ एकत्र रहते हैं। यों तो प्रत्येक देश के शहरों में गाँवों की अपेक्षा अधिक शोरगुल मचा रहता है, किन्तु लन्दन की चहल-पहल सबसे निराली है। कहीं मोटर, बस, लारियाँ और सवारियाँ दौड़ रही हैं, तो कहीं पर लोगों की भीड़ लग रही है। उसी में कुछ लोग गाँठ काटने के लिए घात लगाते रहते हैं। इस शहर के दृश्य को देखकर एक अमेरिकन कहता है, "मैंने आज तक जितने शहर देखे हैं, उनसे लन्दन में यही विचित्रता है कि यहाँ पर सदा सुनाई देने वाला गम्भीर शब्द वायुमण्डल में सदैव गूँजा करता है।"

यदि आप सड़क पर चले जाँय, तो आपको राहगीरों

और भिन्न-भिन्न प्रकार की सवारियों की इतनी लगातार भीड़ दिखाई देगी कि आप संशय में पड़ जायेंगे कि ये आपस में लड़ क्यों नहीं जाते। पर वैसी बात नहीं है, क्योंकि वे संयम-नियम का बहुत ध्यान रखते हैं। नियम के विरुद्ध काम करना तो वे जानते ही नहीं। यदि आप भी चले जाँय, तो आप अपने-आप ही नियमानुसार कार्य करने लग जायेंगे। इस प्रकार आपको काफी खाली रास्ता मिल जायगा। यदि कहीं सड़क पर अधिक भीड़ हो गई, तो इसकी दवा आपको एक कोने में दिखाई देगी; यह नीली वर्दी पहने हुए खड़ा सिपाही है। ऐसी अवस्था में वह केवल हाथ उठाता है और आनेवाली सभी सवारियों को पीछे रोक देता है। चाहे आप कितने ही बड़े ओहदे पर या धनी-मानी क्यों न हों, परन्तु उस दशा में आपको चुपचाप ठहर ही जाना होगा। कोई चूं तक नहीं कर सकता; ओठ बन्द रखता है। जब रास्ता साफ हो जाता है, तब वह हाथ नीचे गिरा कर आपको आगे बढ़ने की आज्ञा देता है। जिस समय महाराजाधिराज श्री पञ्चम जार्ज का राज्याभिषेक हुआ था, उस समय न्यूजीलैण्ड के प्रधान मन्त्री सर जोसेफ वार्ड भी पधारे थे। उन्होंने स्वागत के लिए जो भीड़ देखी, उसका वर्णन करते हुए लिखा है कि—"मैं लोगों की मुस्तैदी और अधिकारियों का सहायता करने का भाव देखकर आश्चर्यित हो गया। वहाँ की पुलिस को सब देशों से कम तकलीफ उठानी पड़ती है; क्योंकि सभी लोग उनका अदब मानते हैं।

ःने इसका एक ज्वलन्त उदाहरण देखा। एक जगह पर लगभग दो हजार आदमी आगे बढ़ने के लिए आपस में धक्का-मुक्की कर रहे थे। इतने में दो घुड़सवारों ने आकर पीछे हटने की आज्ञा दी। भीड़ फौरन हट गई। इसीसे आप विचार कर सकते हैं कि उनकी आज्ञा का कहाँ तक आदर होता है। यदि कोई दूसरा देश होता, तो लोग कारण पूछ बैठते और मनमानी करने के लिए हठ करते। परन्तु यहाँ किसी ने जीभ भी न हिलाई। मुझे जान पड़ता है कि उनमें शीघ्र आज्ञापालन करने की आदत इस कारण पड़ गई है कि उन्होंने बड़ा-बड़ा प्रबन्ध करते समय यह अनुभव कर लिया है कि कोई भी प्रबन्ध करने में तब तक सफलता नहीं हो सकती जब तक सहायक-वर्ग या जनता पुलिस की आज्ञा को आदर और श्रद्धा की दृष्टि से न देखे। पुलिस वालों पर कोई भी भार नहीं है। उनका संकेत हुआ कि कार्य पूरा हुआ। इसलिए उनको कठिनाई का तो अनुभव ही नहीं है। वे होते भी हैं धीर, गम्भीर और साहसी। जनता गुण-ग्राहक है। वह सबकी उपाधि एवं मान-प्रतिष्ठा का ध्यान रखती है।"

यहाँ पर सबसे विचित्र बात जो हम लोगों ने देखी, यह है कि लोगों में आपस में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं है। राजा-रंक, दानी-भिक्षुक, सुसज्जित और चिथड़े पहने हुए—सभी बिना किसी प्रकार की हिचकिचाहट के मिलते-जुलते हैं और एक साथ चलते-फिरते हैं। लोगों के

व्यवसाय में विभिन्नता है। कहीं आप पत्रकार, वकील आदि बुद्धि से काम लेने वाले व्यक्ति पायेंगे, तो कहीं हट्टे-कट्टे सैनिक; कहीं पीले बदन का क्लर्क है, तो कहीं कोई अभागा कैदी। यहाँ पर दुनिया के भिन्न-भिन्न भागों से लोग भ्रमण के लिए या किसी काम के सम्बन्ध में आते हैं। इसलिए आप जब कभी सड़क पर निकल जाइये, तरह-तरह की भाषाएँ सुनेंगे।

अब हम लोग एक ऐसे स्थान पर आ गये जहाँ फव्वारे पानी उछाल रहे हैं। इस जगह का नाम 'ट्राफलगर स्कायर' है। यहाँ पर अनेक स्मारक बने हुए हैं। यह नेल्सन की, जिसने ट्राफलगर की विजय में ख्याति प्राप्त की थी, समाधि है। तभी से इसका नाम 'ट्राफलगर स्कायर' रख दिया गया। उसके उत्तर 'नेशनल गैलरी' मिलेगी जहाँ दुनिया के भिन्न-भिन्न भागों से तस्वीरें और पुस्तकें मँगा कर रखी हुई हैं। इसका व्यय धनीमानी जनता देती है। सभी जाकर मनोनुकूल पुस्तकें पढ़ सकते हैं। लन्दन में आपको ऐसे अनेक स्थान मिलेंगे जहाँ आप हरएक वस्तु—तस्वीर से लेकर खाद्य-पदार्थ तक—पा सकते हैं। यहाँ पर इनमें सबसे बड़ा 'ब्रिटिश अजायबघर' है। यहाँ संसार की सभी आश्चर्यजनक वस्तुएँ संगृहीत हैं। इस पुस्तकालय में सभी विद्यार्थी नित्य पढ़ सकते हैं। अनेक ग्रन्थ तो ऐसे हैं जो शायद ही कहीं मिलें। इंग्लैण्ड में यह नियम है कि जो कोई भी नई पुस्तक प्रकाशित हो, उसकी एक प्रति इस

पुस्तकालय में भेजना अनिवार्य होगा। विचारिये, यह सब केवल वहाँ की जनता का दान है।

इसके दक्षिण ओर जो सड़क जा रही है, वह 'पार्लमेंट भवन' और 'वेस्ट मिनिस्टर' को जायेगी। बीच में गवर्नमेण्ट के दफ्तर मिलेंगे। इसीमें भारत-सरकार का दफ्तर भी है। पश्चिम जाने वाली सड़क 'बकिङ्गम पैलेस' तक जायेगी। यह महल महारानी विक्टोरिया की स्मृति में बनाया गया था। श्री पञ्चमजार्ज जब कभी लन्दन में आते थे, तो यहीं ठहरते थे। लन्दन में बादशाह के पूर्वजों या अनेक मरे हुए साहसी पुरुषों के स्मारक हैं। इस प्रकार हम चाहे जिधर होकर भी जायें, हमें उनकी कृतियों का स्मरण हो आता है। हमें चेतावनी मिलती है कि तुम्हें संसार में जीनव सफल करने के लिए इस प्रकार पैर पसारना पड़ेगा।

यह देखिये 'पालमाल' है। यह लन्दन के बड़े मार्गों में से सबसे अधिक सुरम्य स्थान पर स्थित है। यह अठारहवीं शताब्दी में काफ़ी के व्यापार के लिए बनवाया गया था। अब यह विद्वन्-मण्डली का स्थान बन गया है। इस सड़क के पास ही फाक्स, गिबन बायरन आदि ने साहित्यिक जीवन व्यतीत किया था। अब वहाँ शानदार क्लब बनाये गये हैं। लन्दन में यह एक नियम-सा है कि हर-एक आदमी को कोई न कोई क्लब अपने आगमन से अवश्य सुशोभित करना पड़ता है। कुछ लोग मित्रों से गप्प उड़ाने के लिए जाते हैं; कुछ लोग समाचार-पत्र पढ़ने के लिए; तो

कोई-कोई भोजनालय की अपेक्षा अधिक शान्त और सफाई से क्षुधा तृप्त करने के लिए ही पधारते हैं। इसका प्रधान उद्देश्य यह है कि किसी न किसी प्रकार लोगों की पारस्परिक जान-पहचान की संख्या बढ़े। यहाँ बुड्ढे भी खूब बने-ठने दिखाई देंगे। साथ ही बूट, सूट और हैट इत्यादि कसे हुए उत्साही नवयुवक-दल मिलेंगे। इसी प्रकार देश का शासन या युद्ध करते हुए भी एक दूसरे से हेल-मेल करने का प्रयत्न किया जाता रहता है।

सेण्ट जेम्स पैलेस की दीवार सैकड़ों वर्ष का धुँआ लगने से काली पड़ गई है। सड़क के दोनों ओर क्लब और भोजनालय दिखाई पड़ते हैं। यह 'पिकैडिली' है। यहाँ पर सुसज्जित युवक-युवती-दल हाथ मिलाकर टहलते हुए मिलते हैं। इनमें से कुछ लोग खरीद करने जा रहे हैं। यूरप की जगत्-विख्यात दूकानें 'वाण्ड स्ट्रीट और रिजेण्ट स्ट्रीट' में ही हैं। यहाँ पर बहुमूल्य वस्तुओं—हीरा, गहने, रेशमी कपड़े, फीते, गाउन और तरह-तरह के बहुमूल्य पत्थरों की दूकानें सजाई हुई रहती हैं, जिसे देख कर यात्री मोहित हो जाता है; परन्तु शायद ही कोई लालच में आकर एक बार में इतना सामान खरीद सकता है। यहाँ का दृश्य देखकर सन्तोषी पुरुषों के दिल में भी कुछ विकार आ जाता है। संसार के सम्पूर्ण ऐश्वर्य का यहीं पर भ्रम हो जाता है।

जब हम 'पिकैडिली' से आगे बढ़ते हैं, तब एक ऐसे

स्थान पर पहुँचते हैं जहाँ एक रमणीक उद्यान के चारों ओर अहाता बना हुआ है। इसके सामने हमारे दाहिनी ओर रईसों की कोठियाँ हैं; जैसे ड्यूक आफ विलिंग्टन का—जिसने वाटरलू के मोरचे पर नैपोलियन को परास्त किया था—'एप्सले हाउस' है। अन्त में 'हाइड पार्क कार्नर' पड़ता है। इसके सामने 'सेण्ट जार्ज औषधालय' का विशाल भवन है। यहाँ पर सभी दीन-दुखियों को मुफ्त में दवा दी जाती है। यह इङ्गलैण्ड के धनी-मानी पुरुषों का दान है। इसमें गवर्नमेण्ट का एक पैसा भी नहीं लगा है। वहाँ के लोगों का यह सिद्धान्त है कि दान देना प्रत्येक मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य है। इसी लिए सभी लोग कर और मकान-भाड़ा देना जितना आवश्यक समझते हैं, उतना ही गरीबों की सहायता करना भी। इस कार्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय का यथाशक्ति अंश निकाल दिया करता है। इससे दुखियों का दुख दूर हो जाता है, असहायों को आश्रय मिल जाता है। यहाँ के आदमी अकाल पड़ने पर केवल सुन या पढ़ कर ही नहीं चुप रह जाते। जिस प्रकार भारतवर्ष में अकाल पड़ने पर गवर्नमेण्ट 'तकावी' देती है; पुल, रेलवे आदि बनवा कर मजदूरी देने लगती है; उसी प्रकार इङ्गलैण्ड की जनता अकाल पड़ने पर—जो आजकल असम्भव हो गया है; क्योंकि यह देश कृषि-प्रधान नहीं रह गया; व्यापार-प्रधान है—अपनी करुणाजनक दशा समाचार-पत्रों में प्रकाशित करा देती है; थोड़े ही समय में भिन्न-भिन्न भागों से

धनी-मानी व्यक्ति यथाशक्ति धन देकर ऐसा कर देते हैं मानों वहाँ अकाल ही नहीं पड़ा था। तात्पर्य यह है कि उस देश के राजा-रईस गवर्नमेंट की मालगुजारी और किराया देकर भोग-विलास-मय जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा शेष धन को पुण्य में लगाना अच्छा समझते हैं। यह आदर्श भावना भारतवर्ष के राजा-तालुकेदार और सेठ-साहूकारों को छू तक भी नहीं गई। वे तो इसी ताक में रहते हैं कि कब घात पावें कि प्रजा अथवा जनता का खून तक भी चूस जावें। धन्य है वह देश। और धन्य है ऐसे सपूतों को आश्रय देने वाला यह भारत! क्या यह भारत के लिए लज्जा की बात नहीं है?

ऊपर हमने आपसे कहा है कि 'हाइडपार्क कार्नर' लंदन का बहुत सुरम्य स्थान है। यहाँ सहन पर हरी घास लगी है; ऊपर से पेड़ों का साया है। लन्दन दुनिया में सबसे अधिक आरोग्यपूर्ण शहर है, क्योंकि यहाँ पर आपको शायद ही कोई ऐसा स्थान मिलेगा जहाँ पर हरे पेड़ दिखाई न दें। यह शहर भर के लोगों के वायु-सेवन करने का स्थान है, जहाँ गर्मी में मजदूर आकर लेटे पड़े रहते हैं, लड़के क्रिकेट खेलते हैं, रईस सवारी पर सुबह-शाम टहलने के लिए आते हैं। महाराज पञ्चम जार्ज 'रोटेन रो' के घोड़े पर नित्य आते थे। इसका एक भाग जलमय है जिसको 'दि सरपेण्टाइन' कहते हैं। लन्दन में अनेक उद्यान हैं; किन्तु कोई भी इतना सुखद नहीं है। यह 'वेस्ट एण्ड' का रमणीक भाग है।

२



हाइड पार्क का एक दृश्य

यदि आपको लन्दन के पश्चिमी भाग से पूर्वी भाग में जाना है, तो मोटर-बस पर सवार हो जाइये। यह आपको एक नये ही स्थान पर पहुँचा देगी जो पश्चिमी लन्दन से बिलकुल दूसरे ढङ्ग का होगा। ऊपर के वर्णन से आप यह न समझ लें कि लन्दन में केवल गरीब ही गरीब हैं। वहाँ सड़क पर आपको सभ्यतम लोग भी दिखाई देंगे। उन्नतिशील मनुष्य अपने-अपने काम पर इधर उधर सवारी पर जाते हुए देख पड़ेंगे। यदि आप शीघ्रता में हैं, तो 'टू पेनी ट्यूब' की सवारी अच्छी होगी। यह सबसे अधिक तेज चलनेवाली सवारी है। इसके लिए आप स्टेशन पर चले जाइये। टिकट कटा कर एक कमरे में—चढ़ने उतरने की कल पर—जा बैठिये। वहाँ के बाबू लोग कल का स्विच दबा देंगे। आप शीघ्र जमीन के बहुत अन्दर चले जाइयेगा। वहाँ दरवाजा खोल कर बाहर आइये, जहाँ अपने को एक गोल सुरङ्ग में एक प्लैट-फार्म पर पाइयेगा। बिजली से चलने वाली गाड़ी आयेगी। आप चढ़ कर जमीन के नीचे-नीचे इच्छित स्टेशन पर पहुँच जाइयेगा। यहाँ फिर आप लिफ्ट के सहारे ऊपर स्टेशन पर पहुँचा दिये जायंगे। टिकट दे दीजिये और अपना रास्ता नापिये। आपको यहाँ की विभिन्नता देखकर आश्चर्य होगा, किन्तु यह जमीन के ऊपर-नीचे के देश होने के कारण अन्तर जान पड़ता है।

अब आप ऐसे स्थान पर पहुँच गये जहाँ न तो पहले की तरह के शानदार महल हैं, न सजी हुई बड़ी-बड़ी दूकानें हों। लन्दन के इस पूर्वीय प्रान्त में केवल गरीब, अनाथ और

मजदूरों का घर दिखाई पड़ता है। न वह वैभव दिखाई देता है, न वे सुख के स्थान। जो कुछ कार्यालय या यन्त्रालय हैं, वे भी दीनावस्था में पड़े हुए हैं। मशीनों की घरघराहट और भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं की गंध परेशान कर डालती है। आपको सड़क पर चोरी की घात में बैठे हुए बहुत से लोग मिलेंगे, परन्तु ये दिन में पुलिस से डरते हैं, और रात्रि के समय बाहर निकलते हैं। इसलिए इनको 'रातकी चिड़ियाँ' कहते हैं। इनका एक-मात्र पेशा चोरी करना है। इसके आगे जाने पर आपको उजड़े हुए ग्राम मिलेंगे जिनमें गरीबों की आह सुनाई देगी और बीमारों का कराहना हृदय में आघात करेगा। लन्दन में बहुत-सी धर्मशालाएं बनी हुई हैं जिनमें सदावर्त बंटा करते हैं। यहाँ असहाय, अनाथ अपने कुटुम्ब के साथ आकर ठहरते हैं। उनको खाना-कपड़ा मिलता है। उन्हें कुछ काम भी करना पड़ता है। नियम के विरुद्ध काम करने पर वे निकाल-बाहर किये जाते हैं। धनी औरतें गरीब और बीमार आदमियों के महल्ले में अन्न-जल बाँटने के लिए जाती हैं। आजकल इस समाज की दशा सुधारने का प्रयत्न किया जा रहा है। पादरी लोग जाकर शिक्षा देते हैं। फिर भी दशा अभी तक वैसी ही है।

यह वर्णन सुनकर आप यह न समझ लें कि वहाँ के लोगों का जीवन भारत के गरीबों की तरह है। रात्रि के समय 'व्हाइट चैपेल रोड' पर चले जाइये। वहाँ आपको इनके मनोरञ्जन की सामग्री दिखाई देगी। मौसम कैसा ही हो, परन्तु सड़क गैस-

बत्ती से चहकती रहती है। मनोरञ्जन के ऐसे सामान आपको कहीं भी नहीं मिलेंगे। कोई हँस रहा है, कोई गप्प लड़ा रहा है, तो कोई कहकहा मार रहा है। झुंड का झुंड उन्मत्त जान पड़ता है। इन सबको देखने से मालूम होता है कि इनको किसी बात की चिन्ता ही नहीं है। सड़क पर मुलायम गद्दीदार ट्राम-गाड़ियाँ दौड़ती रहती हैं। इस भाग के दिन और रात के दृश्य में आकाश- पाताल का अन्तर है।

उत्तरी और दक्षिणी लन्दन में 'विश्व-विद्यालय-सन्धि' का नियम लगा हुआ है। आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मास्टर आकर गरीबों को शिक्षा देते हैं कि परिस्थिति के कारण उनको दलित नहीं बना रहना चाहिये। पढ़ने का अधिकार सभी को प्राप्त है। सभी पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ सकते हैं। विश्व-विद्यालय की ओर से बनी हुई पाठशालाओं में सभी जाकर व्याख्यान सुन सकते हैं। इस प्रकार कालेज-जीवन का अनुभव उनको यहीं पर हो जाता है। कहने का मतलब यह कि गरीबों का क्लब यही है। इससे हमें यह जान पड़ता है कि इंग्लैण्ड के लोग केवल धन से ही सहायता नहीं करते; वरन् अपना समय अपने गरीब भाइयों को सभ्य और शिक्षित बनाने में भी लगाते हैं। उनका हृदय जनता के लिए उदार होता है। किसी देश के भविष्य की उन्नति वहाँ के निवासियों के ऐसे ही भाव पर निर्भर होती है। ईश्वर करे भारत में भी ऐसे महानुभाव जन्म लें।

तीसरा दृश्य

शहर

यह भाग लन्दन में सबसे अधिक व्यावसायिक है। यहाँ की जन-संख्या बहुत कम है, क्योंकि लोग यहाँ पर दफ्तर या मालगोदाम में केवल काम करने के लिए आते हैं। चिमनी के बराबर चलते रहने से धुंआँ अधिक निकला करता है। जल-वायु ठीक नहीं है। इसलिए व्यापारी या दूकानदार सभी दिन में काम कर रात में शहर के बाहर रहने के लिए चले जाते हैं। यहाँ पर जो काले कपड़े के कोट पहने हुए हैं, वे रेलवे स्टेशन में काम करते हैं। ये उस भाग में रहते हैं जिसको हमलोगों ने डोवर से उतरते समय देखा था।

प्राचीन काल में इंग्लैण्ड का प्रत्येक नगर चहारदीवारियों से घिरा हुआ रहता था, जिसका चिह्न लन्दन में अभी तक मिलता है। यद्यपि लन्दन अब बहुत बड़ा शहर हो गया है, तथापि उस स्थान को अभी तक 'पुराना शहर' कहते हैं। पश्चिम से आते समय 'टेम्पुल बार' पड़ता है। यहाँ पर कानूनी कचहरी है। यहाँ एक फाटक था जिस पर देशद्रोही सबके सामने खड़े कराये जाते थे। फ्लीट की सड़क पर मुद्रण-यन्त्रालय हैं। यहाँ हर समय नये समाचार-पत्र छपकर

निकलते रहते हैं। इसलिए बहुत से लोग अखबार बाँटने की नौकरी करते हैं। इंग्लैण्ड में पत्रों का मान बहुत अधिक है; क्योंकि कभी-कभी किसी समाचार के पढ़ने से भाग्योदय भी हो जाता है। जैसे किसी ने पढ़ा कि कपड़े का भाव कल से पचास सैकड़ा बढ़ जायेगा, तो वह आज सबसे पहले अधिक खरीदकर रख लेगा और एक का दो बना लेगा। उस देश और भारत के व्यापारियों में यही अन्तर है।

शहर में सबसे अधिक चहल-पहल के स्थान बैंक आफ इंगलैण्ड, दि रायल एक्सचेञ्ज और मैन्शन हाउस हैं। पहला जातीय कोष है। यह इंग्लैण्ड के अन्य कोषों का केन्द्र है। रायल एक्सचेञ्ज में गवर्नमेण्ट या कम्पनियों के सामान और हिस्से बेंचे जाते हैं। मैन्शन हाउस शहर की कोतवाली है। यहाँ पर पुलिस का दफ्तर है। यहाँ से चारों ओर सड़कें गई हैं। सभी तरह के कामकाजियों की भीड़ लगी रहती है।

आप इंग्लैण्ड में जितने लोगों को इधर-उधर घूमते देखेंगे, सभी को धन की धुन सवार है। चाहे कोई कितना ही धनी क्यों न हो; किन्तु धन इकट्ठा करने के रोग से शायद ही कोई बचा होगा। आलसी की तरह बैठे रहने से परिश्रम से धन कमाना सभी अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते हैं। वे धन के प्रेम में इसलिए पागल हैं कि धन से मनोवांछित वस्तु पा सकते हैं। स्त्री-पुत्र के पालन के लिए और लड़के को पढ़ाकर देशाटन को भेजने आदि सभी कामों के लिये धन की ही आवश्यकता है। इसलिए उनका यह विचार घृणा करने

योग्य नहीं है; बल्कि हमें यह विचार करना चाहिए कि धन एकत्र करने में उनका क्या उद्देश्य है और वे ईमानदारी से काम करते हैं या नहीं। इसकी पहचान हम इतने ही से कर सकते हैं कि परीक्षार्थी कर्त्तव्यों में आज्ञापालक है या नहीं और उसमें स्वार्थपरता की कितनी मात्रा है।

जब लन्दन में टेम्स के पुल पर जाकर नदी की ओर देखेंगे, तब आपको अनेक देशों से आये हुए जहाज दिखाई देंगे। यहाँ मालगोदाम, कालीघाट और उतारने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। किसी जहाज पर माल चढ़ाया जा रहा है, तो किसी से उतारा जा रहा है। बने हुए माल लन्दन के बन्दरगाह से बाहर भेजे जाते हैं; कच्चा माल और खाने का सामान यहाँ से देश के अन्दर जाता है। यह रेलों द्वारा भीतर के शहरों में मिला हुआ है। "नारंगी आठ या नौ करोड़ टन के लगभग आती है। किसमिस इत्यादि मेवे बारह हजार टन आते हैं।" टेम्स नदी ने लन्दन शहर की उन्नति में बहुत अधिक भाग लिया है। इसी के कारण इङ्गलैण्ड की जनता लन्दन-निवासियों को आदर की दृष्टि से देखती है। इङ्गलैण्ड के जहाज समुद्र में हैं। समुद्र के जहाजों को यह शरण देती है, उनको बन्दरगाह तक पहुँचने में सहायता पहुँचाती है। इसलिए इंग्लैण्ड की महत्ता इसी पर निर्भर है। इङ्गलैण्ड का साहित्य और इतिहास इसी के वर्णन से भरा पड़ा है। कवियों के हृदय पर प्रभाव डालने वाली माता टेम्स ही है। इङ्गलैण्ड में इसका मान भारत की

गङ्गा की तरह है। सूर्यास्त के बाद इसका सायंकालीन दृश्य बड़ा ही आकर्षक होता है। जहाज की बनावट विचित्र मालूम होती है, पानी का रङ्ग कुछ और ही देख पड़ता है; समुद्र और नदी के जल में सन्धि हो जाती है।

चौथा दृश्य

वेस्टमिनिस्टर अबे

यह लन्दन का एक प्रसिद्ध मकान है। दुनिया के सात प्रसिद्ध महलों में इसका नाम गिना जाता है। आँग्ल-साहित्य और इतिहास में इसकी महत्ता का खूब वर्णन किया गया है। डेन स्टेन्ली का कथन है कि "संसार की प्रसिद्ध इमारतों में केवल वेस्टमिनिस्टर अबे ही का नाम आता है। लन्दन की चमक-दमक वाली अन्य इमारतें केवल यहीं तक प्रसिद्ध हैं। बहुत से मकान इससे अधिक सुन्दर और चकाचौंध पैदा करने वाले हैं; बहुत-से अधिक लम्बे-चौड़े और गहरे-ऊँचे मिलेंगे; किन्तु इसे छोड़ आपको कोई भी दूसरा महल नहीं मिलेगा जिसका नाम आँग्ल-इतिहास में इसके समान लगातार आया हो।

यह एक पुरानी इमारत है। प्राचीन काल से ही धार्मिक केन्द्र होने से आज तक श्रद्धा की दृष्टि से देखी जाती है। धार्मिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में इसका आधिपत्य रहा है। आज आप इसे जिस स्थान पर देखते हैं, वह रोमन और ब्रिटिश सन्धि के अनुसार सीमा था। सातवीं शताब्दी

में पूर्व सेक्सन के बादशाह सेबर्ट के समय में यहाँ एक गिरजाघर बनाया गया। वह तत्कालीन पादरी सेण्ट पियर को अर्पित कर दिया गया। सन् १०४६ में एडवर्ड दि कनफेसर ने इसको फिर से बनवाया जिसका चिह्न अभी तक है। तब से आज तक जितने बादशाह हुए, सभी ने इसका कोई-न-कोई भाग बढ़ाने का प्रयत्न किया है। इसमें देश-भक्त पुरुषों और लगभग सभी राजाओं की समाधियाँ हैं। सभी बादशाहों का यहीं पर राज्याभिषेक किया जाता है जिसमें उनको अपने पूर्वजों की कृतियों का स्मरण रहे और उन्हें यह ज्ञात हो जाय कि उनके ऊपर धार्मिक और राजनीतिक दोनों तरह का उत्तरदायित्व दिया जा रहा है। इस प्रकार यह बहुत सुन्दर है। आँग्ल-इतिहास की प्रत्येक घटना में किसी-न-किसी रूप से अवश्य सम्बद्ध है। यह देश के प्रसिद्ध वीरों का राष्ट्रीय स्मारक है। लोग इसे 'अठारहवीं शताब्दी के मृत व्यक्तियों का शान्त मिलन स्थान' कहते हैं।

जब आप सड़क पर इसके पास जाइयेगा, तब वहाँ आपको दर्शकों की एक भीड़ मिलेगी, रङ्ग-बिरङ्गे चित्रित पत्थर चमक पड़ेंगे; साधुओं और राजाओं की मूर्तियाँ दिखाई देंगी। सबसे ऊपर बहुत-से गगनचुम्बी धरहरे हैं। इनमें भी प्रवेश करते ही आँखें चकाचौंध में पड़ जाती हैं; क्योंकि सूर्य का जो प्रकाश रंगीन खिड़कियों से होकर जाता है, वह मिल्टन के कथनानुसार—कोठे पर की खिड़कियों से धुँधला धार्मिक प्रकाश आता है। छत पर चित्रकारी की गई है।

दीवारें स्मारकों से भरी पड़ी हैं। आप घूमते-घूमते ऐसे स्थान पर पहुँचेंगे जहाँ केवल लेखकों और कवियों की स्मृतियाँ वर्णित हैं। एडीसन, गोल्डस्मिथ और टेनीसन तथा पैलेस्टाइन में लड़ने वाले राजाओं का वर्णन अच्छी तरह किया है। इङ्गलैण्ड अपने महापुरुषों का इस प्रकार आदर करता है।

इतिहास-लेखक फराउडे का कथन है कि "वे अब न तो हमारे सम्मुख आ सकते हैं और न हमारी कल्पना-शक्ति ही इतनी प्रबल है कि हम उनको सदैव स्मरण रख सकने का उद्योग कर सकें। केवल स्मारक ही एक ऐसी वस्तु है जिसको देखते-देखते हमें यह ध्यान हो आता है कि जब वे जीवित थे, तब किस क्षेत्र में, किस प्रकार विचरण कर सफल होते थे।

जहाँ एडवर्ड दि कनफेसर का स्मारक है, वहाँ पर आपको रखी हुई दो कुर्सियाँ मिलेंगी। पहली पर एडवर्ड प्रथम का राज्याभिषेक हुआ था दूसरी पर रानियों का तिलक होता है। एडवर्ड प्रथम की कुर्सी के नीचे आपको एक पत्थर 'स्टोन आफ डेस्टिनी' मिलेगा। इसको वह स्काटलैण्ड से जीत कर लाया था। स्काटलैण्ड-निवासियों का यह दृढ़ विश्वास है कि यह महती शक्ति के पास ही रहता है। भारत के कोहेनूर हीरे की भी यही कथा है। तब से आज तक जितने अँग्रेज बादशाह हुए, सभी को यहीं पर गद्दी दी गई है।

वेस्टमिनिस्टर अबे में पुजारी और जनता दोनों प्रतिदिन सबेरे इकट्ठा होकर ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवन्! हमारी सन्तान के लिए शान्ति, प्रसन्नता, सत्यता, न्यायशीलता, धर्म और दया प्रदान कीजिये। इस प्रार्थना को सुनकर जान पड़ता है कि वहाँ किसी मतमतान्तर का काम नहीं है। संसार का कोई भी धर्म क्यों न हो, सभी में इन गुणों की प्रशंसा की गई है। इसलिए सभी धर्म वालों के लिए खुला हुआ है। कोई किसी को रोक नहीं सकता।

यह एक राष्ट्रीय महल है। यों तो यह स्मारकालय कहा जा सकता है; परन्तु इंग्लैण्ड के हर-एक जिले में एक गिरजा-घर बना हुआ है जहाँ पर पूजा-पाठ होता है और वीरों की समाधियाँ बनती हैं। उन जिलों में जितने राजा-रईस होते आये हैं, सभी ने उसमें कुछ-न-कुछ बढ़ा दिया है। इस प्रकार के यहाँ अनेक गिरजाघर हैं। इनके बनाने वाले मर गये, उनकी विजय और उनके अत्याचारों का नाम मिट गया; किन्तु उनके उदार कार्य आज तक उनके नाम को अमर किये हुए हैं।

पाँचवाँ दृश्य

देहाती नगर

मैंने अब तक आपको शहर का कुछ हाल बताया, जहाँ जीविका या मनोरञ्जन के लिए लोगों की भीड़ लगी रहती है; मकान आदमियों से भरे रहते हैं। वे एक दूसरे के बहुत पास-पास बने होते हैं। जगह बहुत कम है; परन्तु रहने वाले अधिक हैं। इसलिए कई मञ्जिल के मकान बने हुए हैं। फिर भी सभी को ठहरने के लिये जगह नहीं मिलती। इसलिए मजदूर आदि दिनभर काम करके रात को रहने के लिए शहर से बहुत दूर चले जाते हैं। इनको फिर शीघ्र वापस आना होता है। इसलिए शहर में रेल और ट्राम-गाड़ियों का जाल-सा बिछा हुआ है। जब लोग दिन-भर काम करके थक जाते हैं तब संध्या को कुछ दिल बहलाना चाहते हैं। इसलिए थिएटर, सिनेमा, टाकी, नृत्यशाला, गायनशाला आदि बने हुए हैं जहाँ लोग मधुर गान सुनकर थकावट दूर करने जाते हैं। शहर के इतने लोगों में से बहुत-से चोर, बदमाश और

डाकू भी होते हैं। उनसे लोगों की रक्षा करने के लिए पुलिस का प्रबन्ध रहता है, जो उनको पकड़ कर उचित दण्ड देती है। बहुत-से लोग खाने-पहनने आदि की आवश्यक वस्तुएं खरीदने के लिए आते हैं। इसलिए बाजार, दूकान, रेलवे-स्टेशन और डाक तथा मालगोदाम बने रहते हैं। जहाँ इतने लोग आते-जाते रहते हैं, इतनी चीजें सड़ती-गलती रहती हैं, इतनी गन्दगी फैलती है; वहाँ स्वच्छ गावों की अपेक्षा शीघ्र बीमारी फैल जाने का डर रहता है। इसीलिए म्युनिसपैलिटी का प्रबन्ध है। भंगी सड़क और नालियों की गन्दगी झाड़ ले जाते हैं। रोगियों और घायलों के लिए अस्पताल बने हैं। कोई घायल या बीमार हुआ कि तुरन्त डाक्टर बुलाया गया। इसी प्रकार आग लगने पर उसे बुझाने के लिए 'फायर ब्रिगेड' तैयार रहते हैं। जब मैं आपको वहाँ गाँवों के लोगों की दशा बतलाऊंगा तब आप बिलकुल आश्चर्य में आ जायेंगे। वहाँ न तो इतने अधिक आदमी मिलेंगे, न इतनी घनी बस्ती। खेत में दूर-दूर घर बने हैं। मजदूरों और सड़कों की इतनी अधिकता नहीं है। हवा स्वच्छ होगी। इतने अधिक प्रबन्ध और सावधानी की आवश्यकता बिलकुल नहीं रहती। आपको सड़क पर न तो पुलिस मिलेगी और न बिजली-बत्ती। आपको अधिक अस्पताल, मशीनें और दूकानें नहीं मिलेंगी। काम चलाने भर के सामान मिल जायँगे।

मैं दक्षिणी इंग्लैण्ड के एक गांव का हाल सुनाता हूँ, जहाँ मैंने पहले हरे-भरे खेतों के बीच में एक मकान देखा। घासें

लगी थीं। वृक्ष झकोरे मार रहे थे। एक फाटक से मैं भीतर गया। वहां गायें चर रही थीं; हल चल रहे थे। आगे बढ़ने पर एक नदी मिली। किनारे हरी पत्तियों वाले वृक्ष लगे थे। झरने का जल दिन में स्वच्छ झलक रहा था। वहां चिड़ियों या हलवाहों की बोली के अतिरिक्त कोई दूसरा शब्द सुनाई नहीं देता था। रेलवे वहाँ से दूर है। गाँव की सड़क पर भी बहुत कम पथिक चलते हैं।

अब हम लोग पहाड़ी पर चढ़ते हैं। एक-आध घर पार करके ऐसे स्थान पर आ गये जहाँ दोनों ओर घर-ही-घर दिखाई देते हैं। यह 'हाई स्ट्रीट' है। घर अधिकतर पत्थर या लाल ईंटों के बने हुए हैं। इनकी बनावट बहुत साधारण है। प्रत्येक घर में प्रायः चार खिड़कियाँ, बीच में एक दरवाजा और दो चिमनियाँ रहती हैं। कुछ घरों के सामने फुलवाड़ियाँ लगी रहती हैं, जिनमें सुन्दर सुगन्धित फूल फूले रहते हैं। बहुत-से घर झोपडी की तरह झुके हुए उजाड़ दशा में मिलेंगे मानों भूकम्प आने से गिर गये हों।

नगर के चौक में आने पर एक पुरानी इमारत मिलती है। यहाँ पर एक साइनबोर्ड लगा हुआ है, जिस पर कुछ चिह्न बने हैं; क्योंकि पहले बहुत कम लोग पढ़-लिख सकते थे। इसलिए लोग इतने ही निशान से समझ जाते थे कि यह कोई सराय या दूकान है। इस सराय के सामने, सड़क के दूसरी ओर नार्मनों के समय का बना हुआ गिरजाघर है। इस पर भी एक पत्थर लगा हुआ है। वर्षा और हवा का लगातार

सामना करते रहने से यह प्रायः नष्ट-भ्रष्ट हो गया है; किन्तु खिड़कियाँ अभी तक कुछ अच्छी दशा में हैं। इस गिरजाघर के चारों ओर घास लगी हुई है। यह चौक एक अहाते से घिरा हुआ है। इसमें कहीं-कहीं पत्थर लगे हुए हैं जिन पर लोगों की स्मृतियाँ अङ्कित हैं। यहां लोग प्रति रविवार को प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते हैं। विवाह एवं अन्तिम क्रियाएं आदि यहीं पर की जाती हैं। पहले यहीं पर सार्वजनिक सभाएँ और कचहरियाँ लगा करती थीं; किन्तु अब दूसरी जगह पर इसके लिए अलग भवन बना दिये गये हैं। कुछ और आगे जाने पर टाउन-हाल मिलता है। इसके पीछे से होकर गली गई है। वहाँ पर पादरी का घर पेड़ों की ओट में दिखाई देता है। वह गरीबों की सहायता करता है, बीमारों को धैर्य और शान्ति प्रदान करता है। उसका व्यवसाय ही सबकी शुभ-कामना करना है। जिस घर में वह रहता है वह बहुत पुराना है। प्रायः वहाँ के सभी मकानों पर एक तरह की हरी लता छाई रहती है एवं उनपर बेलें चढ़ाई गई हैं। दरवाजे के सामने घास लगी है। जान पड़ता है, मानों हरी चादर बिछाई गई है।

नगर के अन्तिम भाग में उन्नत लोगों के महल हैं। एक में डाक्टर साहब रहते हैं, दूसरे में कर्नल साहब—जो आजकल नौकरी से अवसर ग्रहण किये हैं; तीसरे में एक शान्ति-प्रिया बुढ़िया रहती है। इस समय नगर की जन-संख्या २००० है। अधिकांश मनुष्य पड़ोस के ताल्लुके में काम करते हैं, शेष

गरीब हैं; परन्तु वे सदा प्रसन्न रहते हैं। यहाँ लोगों के मनोरञ्जन का सामान नहीं है। कभी-कभी चलते हुए व्यवसायी टाउन-हाल में थियेटर कर जाते हैं। वहाँ हर साल मेला लगता है। उसमें नाच-गान के ऐसे ही सामान आते हैं। तरह-तरह के खेल—हाकी, फुटबाल, दौड़, कूद-फाँद, कुश्ती, टेनिस, घुड़दौड़ और पोलो इत्यादि—होते हैं। दूर-दूर से लोग गाय, घोड़ा, भेड़ आदि जानवर बेचने और खरीदने के लिए आते हैं। नौकर भी इसी समय ठीक किये जाते हैं।

जब हम लोग नगर से लगभग एक मील दूर जाते हैं, तब लहलहाता हुआ एक रमणीक उद्यान मिलता है। इसके चारों ओर तार लगा हुआ है। भीतर हरे-भरे पेड़ और घासें लगी हैं। इसके बीच में एक महल दिखाई देता है। इसमें इस जिले का मालिक रहता है। जिले के निवासी उसकी प्रजा हैं। वे काश्तकारी खेत जोतते हैं और इसको लगान देकर शेष फसल से अपनी जीविका चलाते हैं। आप बहुत से ऐसे लोगों को पायेंगे जो इसके जानवरों को चराते हैं; सड़क, बाग और खेत-खलिहान की देख-भाल करते हैं। वे उसके नौकर हैं। उसके पूर्वजों ने इन्हें गुलाम बनाकर रखा था। जब से वह प्रथा उठ गई, तब से इसने उन्हें नौकरी में भर्ती कर लिया। इन्हें इतना वेतन देता है कि इनको किसी प्रकार की तकलीफ न होने पावे। इसके बदले में ये भी मालिक के लिए जान तक देने को तैयार रहते हैं। यह सब होते हुए भी इनके जातीय प्रेम का नाता नहीं टूटता। मालिक के पूर्वज इसी मकान में

रहते आये हैं। इसलिए वह अपना कर्तव्य समझकर बीसवीं शताब्दी में भी अपने पुराने मकान को एकदम नहीं छोड़ देता।

इस प्रकार से आप वहाँ के जिले के लोगों को क्रमबद्ध श्रेणियों में विभक्त पावेंगे। उनका पद और स्वत्व निश्चित रहता है। कोई भी सीमा के बाहर काम करने का साहस नहीं करता। सबसे पहली श्रेणी का आदमी 'नोबुल मैन' है। उसके न रहने पर उसका पद और अधिकार 'स्कायर' को प्राप्त है। वह भी काफी भूमि का स्वामी होता है। आसपास में वह एक प्रधान व्यक्ति समझा जाता है। उसकी शान के बराबर का कोई नहीं होता। दूसरी श्रेणी के 'जेण्ट्री' हैं। कोई उनको काम करने के लिए विवश नहीं कर सकता। जिनकी कोठी शहर और देहात दोनों जगह में है, वे भी इसी श्रेणी के हैं। इसके बाद जमींदारों का स्थान आता है। कुछ लोगों के पास अपनी जमीन है, कुछ लोग 'स्कायर' या जमींदारों से लगान पर भूमि ले लेते हैं। सबसे नीची श्रेणी में किसान और मजदूर होते हैं। कुछ तो खेती करते हैं, शेष सब तरह की नौकरी करते हैं। कुछ ऐसे भी लोग मिलते हैं जिनके पास थोड़ी-सी भूमि होती है। वे 'स्माल होल्डिंग्स' अर्थात् थोड़ी जायदाद वाले कह कर पुकारे जाते हैं। कुछ लोग इज्जत का ख्याल करके छोटे काम नहीं करते और खेती करना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं; परन्तु उससे हल और बीज का दाम भी नहीं पैदा कर पाते।

लन्दन में प्रवेश करते समय हम लोगों ने देखा था कि

खाने-पीने का सामान बाहर से ही आता है। अंग्रेजी रोटियाँ रूस और हिन्दुस्तान के गेहूँ से सस्ते में तैयार हो जाती हैं। इसका उस देश की 'कृषि' पर प्रभाव पड़ता है। एक तो वहाँ बहुत कम भूमि है, दूसरे अधिक खर्च करके पैदा किया हुआ अन्न कम दाम पर बेचना पड़ता है। तब भी दूसरे देशों की बराबरी करना कठिन हो जाता है। ये लोग मजदूरी कम देते हैं। अब का नवयुवक-दल इस कष्ट और झंझट-झमेले को पसन्द नहीं करता। वे घर-बार किराये और लगान पर देकर शहरों में रहते हैं। वहाँ उन्हें अधिक धन मिल जाता है। बेचारे ग्रामीण किसी प्रकार निर्वाह करते हैं। शहर का जलवायु मशीनों और चिमनियों के धूँएँ के कारण बहुत खराब है। पहले के लोगों की अपेक्षा—जो सदा देहात में रहते थे—अब के नवयुवक—जो सदा शहर में रहते हैं—कमजोर होते चले जा रहे हैं। इसलिए ये अपने पूर्वजों की तरह बहादुरी का काम नहीं कर पाते। हृदय भी कमजोर हो गया। इसलिए बहुत-से देश इनके अधिकार से निकल कर स्वतन्त्र हो गये या औपनिवेशिक स्वराज्य पा गये। यदि यही हालत रही तो भारत का भी भाग्योदय हो जायेगा। अँगरेज बड़े चतुर, चालाक होते हैं। वे अपनी गलती बहुत जल्दी समझ कर स्वीकार कर लेते हैं। इसलिए अब यह प्रयत्न किया जा रहा है कि भावी सन्तान के लिए स्वच्छ हवा का प्रबन्ध किया जाय। मशीन और चिमनी का काम देहात में होना निश्चित हुआ है। शहर में सभी के लिए—धनी या काम करने

वाले मजदूरों के लिए—खुली हवा में मकान बनाये जायेंगे। उनके हवादार बाग बनेंगे। इस प्रकार शहर और नगर एक दूसरे से मिल जायेंगे। शहर का जल-वायु ठीक हो जायेगा; लोग स्वस्थ हो जायेंगे।

हम लोग देखते हैं कि सायंकाल में नगर बिलकुल शान्त है। कुछ लड़के सड़क पर क्रिकेट खेल रहे हैं। एक आदमी खड़ा-खड़ा देख रहा है। दूसरा घर के बाहर आकर मौसम की चर्चा करता है। हलवाहा अपना घोड़ा नाल बाँधने वाले के पास लेकर खड़ा है। घर-घर प्रकाश फैल गया है। थोड़ी देर में सभी खा-पीकर सो गये। कुत्ते भी नींद में मतवाले हैं। बिलकुल अँधेरा छा गया। इस समय लन्दन में बिजली-बत्ती के कारण दिन का-सा उजाला रहता है। आदमी बराबर आते-जाते हैं, मोटरें भों-भों करती फिरती हैं। थोड़ी देर तक शान्ति रहती है, सभी सड़कों पर पानी छिड़क जाता है। फिर मोटर देहातों से फल, तरकारी लेकर आ धमकती हैं। जिस समय तक देहात के लोग उठते हैं, उस समय तक लन्दन में चहल-पहल मची रहती है।

छठा दृश्य

मनोरञ्जन

शहरों की जन-संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है। अब लोग देहात में रहना पसन्द नहीं करते। इसके कई कारण हैं। एक तो परिश्रमी और चतुर लोगों को शहर में अच्छी मजदूरी मिल जाती है। दूसरे उनको शहर में सायंकाल में दिल बहलाने के लिए अनेक सामान मिलते हैं जो शारीरिक और मानसिक थकावट को दूर कर चिन्ता-रहित बनाते हैं। विचार करने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण जीवन आलस्यमय व्यतीत होता है, सूनसान एवं शान्तमय प्रतीत होता है; परंतु शहर में ऐसा नहीं होता। वहाँ सदा कुछ-न-कुछ होता रहता है। आदमी एक के बाद दूसरा काम करता है। कभी थका हुआ या उदास नहीं मालूम होता। इसको अच्छी तरह समझने के लिए मैं आपको शहर में रहनेवाले की दिनचर्या बतलाता हूँ। वह नित्य प्रातःकाल उठता है, अपना बाहरी काम दिन के नौ बजे तक करता है। फिर खा-पीकर दफ्तर या अपने काम पर चला जाता है। शाम के छः बजे लौटता है। हाथ-पैर धोकर कुछ जलपान करके

बैठ जाता है। यदि कुछ लोग आ गये, तो बैठकर गपशप करता है; नहीं तो किताब ही पढ़ता है। मौसम अच्छा होने पर टहलने चले जाते हैं, बहुत-से लोग मानसिक काम करने के बाद अपने घर के सामने या पीछे लगे नये उद्यान में जमीन खोदने ही में समय बिता देते हैं।

वह आठ बजे अपनी स्त्री और मित्र के साथ शहर में जाता है। वहाँ कहीं पर शेक्सपियर का नाटक हो रहा है, कहीं नया नाटक खेला जा रहा है, तो कहीं पर सुखान्त अभिनय हो रहा है। उसका चित्रण नाच-गा कर किया जाता है। अब वह इनमें से जहाँ चाहता है, कुछ पैसों का टिकट लेकर चला जाता है। मनबहलाव हो जाता है। कम-से-कम उतने समय तक सभी चिन्ताएँ उसके सामने से हट जाती हैं। निर्धन भी प्रसन्नता-पूर्वक रात व्यतीत करता है।

वहाँ पर आपको बहुत-से ऐसे स्थान मिलेंगे जहाँ प्रबन्ध में इन सबसे विभिन्नता रहती है। मनबहलाव के सामानों की कमी नहीं रहती। कई जगह ऐसा भी प्रबन्ध रहता है जिसमें कम समय लगे; परन्तु हरएक तमाशा ऐसा हो जो हँसाते-हसाते सबको लोटा दे। इसलिए जिन लोगों का दिल नाटक आदि देखने में नहीं लगता, वे गायन-शाला के लिए टिकट कटाते हैं। जब सभी लोग बैठ जात हैं, तब एक घण्टी बजती है, सबसे अगला पर्दा उठ जाता है। एक विदूषक आता है। वह गा, बजा और नाच कर ऐसी-ऐसी नकलें दिखाता है कि सभी लोग हँसते-हँसते हाँफने लगते हैं।

कभी-कभी वह कमाल करता है। इसके बाद यवनिका-पतन होता है। सभी को सुस्ताने के लिए कुछ समय तक अवकाश मिलता है। फिर पर्दा उठता है। कुछ लोग रंग-मञ्च पर खड़े दिखाई देते हैं। वे कोई प्रभावोत्तेजक चित्रण संक्षेप में करने लगते हैं। पट-परिवर्त्तन होता है। फिर अवकाश के बाद पर्दा उठता है। तीन आदमी साइकिल लिए हुए खड़े रहते हैं। वे तुरन्त खेल दिखलाने लगते हैं। कभी साइकिल पर पीछे मुँह करके चढ़ते हैं, कभी पैर के बदले हाथ से पैडूल चलाते हैं, कभी साइकिल दौड़ाकर चढ़कर उसके नीचे से निकल जाते हैं। तात्पर्य यह कि ये यथाशक्ति प्रयत्न करते हैं कि सभी लोग अचंभित हो जायँ। इस प्रकार तरह-तरह के खेल बहुत देर तक होते हैं। इस तरह एक के बाद एक दूसरे तारतम्य को वहाँ के लोग 'टर्न्स' कहते हैं। जो 'टर्न्स' जिसको अच्छा लगता है, वे उसे देखते हैं। जिस समय किसी का मन नहीं लगता, उस समय वह टहलने लगता है। फिर जब उसके मनोनुकूल खेल आते हैं, तब वह फिर बैठकर देखने लगता है। उसमें ऐसा प्रबन्ध रहता है कि कोई-न-कोई खेल अवश्य होगा जो एक को नहीं तो दूसरे को जरूर पसन्द होगा। किसी को भी उदास होकर नहीं लौटना पड़ता।

यूरप संसार में सबसे अधिक शिक्षित देश है। वहाँ के लोग नाच-गान के बहुत प्रेमी हैं। लन्दन इसका केन्द्र है। यहाँ पर संसार के अच्छे-अच्छे गायक नृत्य-कला के साथ

अपनी विद्वत्ता प्रकट करते हैं। इङ्गलैण्ड में जो पढ़े-लिखे या धनी हैं, वे अधिकतर ऐसा ही गान सुनना चाहते हैं। इस तरह के स्थान को 'कन्सर्ट्स' कहते हैं। शहर के बड़े-बड़े विद्वान् व्याख्यानालय में जाते हैं। वहाँ वे शिक्षित जनता को वक्तृता सुनाते हैं। लन्दन में ऐसी बहुत सी समितियाँ स्थापित की गई हैं जिनके सदस्य समय-समय पर भिन्न भिन्न विषयों पर व्याख्यान देते हैं। 'रायल ज्योग्राफिकल सोसाइटी' इसी प्रकार की एक समिति है। वहाँ संसार में होने वाले भूकम्प और प्राकृतिक परिवर्त्तनों पर लेक्चर दिये जाते हैं। हाल ही में 'हिमालय में उद्गार' पर वक्तृता दी गई थी उसमें लद्दाख, बालिस्टन तथा उस प्रान्त के पर्वतों के विषय में चर्चा की गई थी।

यह सब तरीका पहले जमाने से चला आता है। बीसवीं शताब्दी में विज्ञान की प्रतिष्ठा बढ़ गई है। मनुष्य प्रकृति के सौन्दर्य-निरीक्षण का आदी बन गया है। वह आश्चर्यजनक नई सुन्दर वस्तुएँ देखना चाहता है। इसलिए लोगों की आँखों को आकर्षित करने के लिए चतुर व्यवसाइयों ने विज्ञापन करने के नये-नये ढंग निकाल रक्खे हैं। आजकल आप शहर में जाते ही भूत का एक तमाशा देखेंगे। इसमें रंग-विरंग की आग की लपट दिखाई देगी जो बुझ जायगी। आप देखकर डर मत जाइये, यह हिन्दुस्तानी भूत नहीं है। यह 'चित्रालय' है। लोगों को मोहने के लिए बिजली के अक्षर बारी-बारी से निकलते और मिटते हैं। यहाँ फाटक

पर तमाशा होने के पहले तक टिकट बँटता है। टिकट लेकर आप अन्दर चले जाइये। वहाँ आपको प्राचीन घटनाएँ या दूर देशों के दृश्य दिखाई देंगे। चित्र सावधानी से खींचे रहते हैं। यदि आप चाहें, तो पञ्चम जार्ज के राज्याभिषेक और पल्टन का दृश्य देख सकते हैं। यहाँ सदा भीड़ लगी रहती है। सड़क पर मोटर, ऑमनीबस, घोड़ा-गाड़ियों की भीड़ लगी रहती है, परन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि इन लोगों का यही पेशा है। इस तरह के लाखों आदमी लन्दन में रोज आते-जाते रहते हैं जिनसे 'छाया-चित्रालय' या 'सिनेमैटोग्राफ हाल' भरे रहते हैं।

जब हम लोग पश्चिमी भाग में जाते हैं; तब वहाँ पर हमें बहुत-से ऐसे मकान दिखाई देते हैं जहाँ सिनेमा हाल की तरह बहुत लोगों की भीड़ लगी रहती है। बिजली-बत्ती बाहर-भीतर दिन बनाये रहती हैं। स्थान हवादार रहता है। साफ बगीचे सुहावने लगते हैं। यहाँ पर स्त्री-पुरुषों की भीड़ लगी रहती है। बहुत से अपने-अपने घर से हंसी-ठट्ठा करते हुए नजर आते हैं। कुछ मोटरें और गाड़ियाँ सिनेमा-हाल या नाट्यशाला की ओर से आ रही हैं। जब हम लोग अन्दर जाते हैं, तब देखते हैं कि जगह-जगह पर मेज, कुर्सियाँ रखी हुई हैं। उन पर मलमल के फर्श बिछे हुए हैं; जमीन पर मोटी दरी और गलीचा पड़ा हुआ है। बिजली-बत्तियाँ जल रही हैं। शीशे के बर्त्तन चमक रहे हैं। स्त्री-पुरुष किसी प्रकार के भेद-भाव के बिना बैठते चले जाते हैं। इतने में खानसामा

तश्तरी में तरह-तरह के भोजन लिये हुये आता है; सबके सामने रखता जाता है। सभी खा रहे हैं; बीच-बीच में मित्रों से गप्पें भी उड़ाते जा रहे हैं, या आगन्तुक जनों से परिचय बढ़ा रहे हैं। इसी समय ऊपर के बैठक में गाना-बजाना हो रहा है। लोगों का यह काम देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। हमारी चिन्ता नष्ट हो जाती है। कष्टों का खयाल तक जाता रहता है। इस प्रकार के भोजनालय को वहाँ 'रेस्टोराँ' कहते हैं। इसका प्रबन्धक आदर के साथ खिला-पिलाकर चलते समय व्यय का ब्यौरा हँसते-हँसते सामने रख देता है। सभी इसको चुकाकर मस्त हो चलते बनते हैं।

जो शहर नये ढङ्ग के बने हुए हैं, वहाँ पर जीवन बहुत आराम से जल्दी व्यतीत होता है। मन हमेशा कुछ-न-कुछ सोचने में लगा रहता है। काम थोड़ी देर में अधिक सफाई से होता जाता है। शहर के रहनेवाले दिन-भर शारीरिक परिश्रम करते हैं, तो रात को कुछ ऐसी चीजों की संगति करना चाहते हैं जिससे उनकी थकावट दूर हो जाय। इसी तरह मानसिक काम करने वाले भी कुछ शारीरिक परिश्रम करके मस्तिष्क से रद्दी बातें निकाल बाहर करते हैं। हाँ, यह बात ठीक है कि जिस सामान को शहर वाले मनोरञ्जन की सामग्री समझते हैं, देहात वाले उसको विलास-मय जीवन का आश्रय कहते हैं। देहात वाले इसको ऐसा इसलिए समझते हैं कि उनकी स्वच्छ हवा और प्राकृतिक

दृश्य किसी तरह के खर्च के बिना ही स्वस्थ रखते हैं। उनके लिए यह व्यर्थ है; परन्तु शहर वालों के लिए तो आवश्यक है; नहीं तो वे पागल और सुस्त हो जायेंगे। ऐसी अवस्था में कोई पूछ सकता है कि क्या देहात वालों के लिए कोई मनोरञ्जन की सामग्री नहीं है? है अवश्य; परन्तु वह बनावटी नहीं; प्राकृतिक है। इसका कारण यह है कि वे शारीरिक परिश्रम करते हैं। इसमें बहुत कम शक्ति नष्ट होती है। मस्तिष्क के लिए किसी खाद्य पदार्थ की आवश्यकता नहीं रह जाती। उन्हें कुछ शारीरिक थकावट आ जाती है। इसके लिए वे खेत से लौट हाथ-पैर धोकर धूम्रपान करते हैं, समाचारपत्र पढ़ते हैं। यदि इससे भी मन नहीं भरता, तो वे पास की सराय में चले जाते हैं। यहाँ बैठकर गाँव के सरदार से गाँव की हालत पर चर्चा करते हैं। गाँव के बहुत-से लोग देहाती खेल खेलते हैं। लड़के लकड़ी की गेंद लेकर खेलते फिरते हैं। जवान 'कोयट्स' खेलते हैं। इसमें लोहे को अंगूठी को जमीन के निश्चित गड्ढे में फेंकते हैं। इस तरह ये स्वच्छ हवा में खेल खेलते हैं। ये अपना खेल अपने-आप देखते हैं। इसके लिए दूसरे को टिकट नहीं देते; परन्तु शहर में इसके लिए कुछ न्योछावर भी करना पड़ता है। शहर में जब वे अपने काम से फुर्सत पाते हैं; तब खेल के मैदान में जाकर सखा-सहेलियों के साथ टहल भी आते हैं। लन्दन या सभी शहरों में फुट-बाल, क्रिकेट, टेनिस इत्यादि के लिए मैदान

बने हुए हैं। वहाँ सभी जाकर खेलते हैं। जो नहीं खेलते, वे देखकर ही सन्तोष करते हैं। वे आपस में मैच देते हैं। इस समय लोगों की भीड़ बढ़ जाती है। टेम्स नदी के किनारे दोनों ओर क्लब बने हुए हैं। कभी-कभी उनके सदस्य आपस में प्रतिद्वन्द्विता करते हैं। इस समय लगभग चालीस-पचास हजार आदमी पहुँच जाते हैं। दुनिया भर के खेलाड़ी भी इकट्ठा होकर मैच खेलते हैं जिसका ब्योरा समाचार-पत्रों तक में निकलता है।

वहाँ का नियम है कि सभी खेल सभी नहीं खेल सकते हैं। मजदूर कुछ खेल के मैदान में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं पा सकते। केवल धनी लोग ही पोलो, घुड़दौड़, बन्दूकबाजी और शिकार कर सकते हैं। इङ्गलैण्ड के केवल उच्च श्रेणी के लोग ही लोमड़ी का शिकार कर सकते हैं। इसके लिए वर्षा की भिन्न-भिन्न ऋतुएँ उपयुक्त हैं। जाड़े के महीनों में जब पेड़ों पर एक भी पत्ती नहीं रह जाती, खेत जुते हुए रहते हैं, ठण्डी हवा सन्-सन् बहती रहती है, तब 'नोबुल मेन', 'स्कायर' या 'जेण्टिलमेन' अपनी मेमों के साथ कुछ घुड़सवारों को लेकर निकलते हैं। उनका घोड़ा बहादुर और होशियार होता है। शिकारियों के पास शिकारी कुत्ते—जो धारीदार कोट पहने रहते हैं—होते हैं। वे छोड़ देने पर जङ्गल के चारों ओर फैल जाते हैं। जब कोई कुत्ता कोई लोमड़ी या खरगोश देखता है; तब वह धीरे से बोलता है। इसको 'गिभ्ज़ टङ्ग' कहते हैं। सभी कुत्ते

कानाफूसी करके इकट्ठे हो जाते हैं। तब सभी साथ-साथ अहेर के पीछे दौड़ते हैं। सभी लालच में आकर नाली-नाला और झाड़ी फाँदते हुए पीछा करने लगते हैं। घोड़े भी उत्सुकता के साथ टाप लगाते हैं। जब अहेर बहुत दूर तक हाथ नहीं लगता, तब इस दौड़ में बहुत से गिर कर पीछे रह जाते हैं। कुछ अन्त तक पीछा करते हैं। अहेर पा लेने पर ये बहुत प्रसन्न होते हैं। बहुत-से लोग लोमड़ी का इस प्रकार शिकार करना घृणित समझते हैं; किन्तु इसका कारण तो यह है कि लोमड़ियाँ मुर्गी और बत्तख खा डालती हैं। दूसरे वे अपनी तेजी पर घमण्ड करते हैं। तो फिर इसका शिकार न करें तो किसके पीछे दौड़ें। इसका शिकार करने से घुड़सवार साहसी, तन्दुरुस्त और बहादुर होते हैं। इससे खुले मैदान लड़ने का अभ्यास अंग्रेजों में बढ़ता जाता है। वे 'फेअर प्ले' की सबसे अधिक प्रशंसा करते हैं।

प्रातःकाल में खेतों का दृश्य बड़ा सुहावना होता है। मुर्गे सूर्य का स्वागत करते हैं। कोयल कुहू-कुहू कूकती है। कठफोरनी, तोता और बत्तख मधुर शब्द सुनाते हैं। इस समय इनका स्वतंत्र साम्राज्य रहता है; क्योंकि आदमी अभी तक अपने खेत में नहीं आये रहते हैं। शिकारी घोड़े पर चढ़कर आता है। कुत्ते पीछे लगे होते हैं जिनका अलग-अलग नाम होता है। ये इसके और इसके पिता के भक्त

रहते आये हैं। प्रातःकालीन दृश्य का वर्णन आपको मिल्टन के 'ला अलगेरो' में सबसे अच्छा मिलेगा।

फिर रेल पर सवार हो जाइये। आध घण्टे में आप देहात में पहुंच जायेंगे। वहाँ आपको स्वच्छ हवा, लह-लहाते वन और नदियाँ मिलेंगी। यहाँ इङ्गलैण्ड के बहुत लोग रोज टहलने के लिए जाते हैं। प्रबन्ध-लेखक स्टेवेन्सन ने 'वाकिङ्ग टूर' अर्थात् 'टहलने के लिए यात्रा' पर एक पोथा ही लिख [मारा है। आजकल लोग साइकिल से यात्रा करना अच्छा समझ रहे हैं। वे छुट्टी पाने पर शहर से बाहर निकल जाते हैं। कुछ लोग वहीं काव्य-रचना करते हैं; कोई ड्राइङ्ग खींचने लगता है; तो कोई मछली मारने जाते हैं। एक वृक्ष-विज्ञान पढ़ता है; तो दूसरा भू-विज्ञान। अधिकांश लोग समुद्र के किनारे चले जाते हैं। वहाँ वे खारे पानी में स्नान करते हैं और स्वास्थ्य बनाते हैं।

जब आप आगे के कुछ भागों की यात्रा का वर्णन पढ़ेंगे, तब आपको सभी बातें अच्छी तरह समझ में आ जायेंगी।

सातवाँ दृश्य

डोभडेल

इंगलैण्ड का मध्य भाग पहाड़ी है। पहाड़ी का नाम डर्बी-शायर है। उसमें कई घाटियाँ हैं, जिनमें डोभडेल सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

डोभ नदी पहाड़ियों के बीच में होकर बहती है। इसके किनारे कहीं हरे वृक्ष का जङ्गल है. कहीं उजाड़-सा पड़ा है। इस स्थान पर नदी में दो चट्टानें निकल आई हैं। इन पर पगडण्डी है; परन्तु बाढ़ आने पर सब नदी के पेट में चले जाते हैं। इससे आगे बढ़ने पर जंगल पड़ता है। फिर चट्टान बाहर निकल आती है, जिसको दूर से देखने पर शेर का भ्रम हो जाता है। प्रातःकाल का दृश्य मनोहर होता है। शीतल-मन्द-सुगन्ध बयार बहती है। सूर्य के प्रकाश से चट्टानों पर जल की चमक दुगुनी हो जाती है। यहाँ से नदी दाहिने मुड़कर एक तंग रास्ते से होकर बहती है। एक ओर की पहाड़ी पर मामूली चरागाह है। सामने की चट्टान पर पेड़ खड़े हैं। आगे बढ़ने पर समतल किनारा पड़ता है। नदी की शोभा

बढ़ने लगती है। जल शुद्ध और स्वच्छ है। इसके गड्ढों में 'ट्राउट' मछली अधिक होती है। बहुत-से मछुवे सबेरे-शाम मछली मारने के लिए इकट्ठे होते हैं।

अंग्रेजी कवि बाइरन जिस दृष्टि से स्वीटजरलैण्ड और ग्रीस को देखता था, वह उससे कहीं अधिक महत्ता डोभडेल को देता है। वह स्वभावतः उसको प्रेम-भरी निगाह से देखता था। गोल्डस्मिथ ने भी इसका स्मरण किया है। यह बड़े-बड़े लोगों की प्यारी बन चुकी है। चार्ल्स द्वितीय के समय में आइजक वाल्टन अपने मित्र काटन के साथ मछली मारने के लिए यहीं पर जाता था। उसने 'कम्पलीट ऐङ्गलर' में नदी के किनारे का वर्णन किया है, "काम के अधिक भार से दबे हुए मनुष्यों, या जिनको चिन्ता अधिक सता रही हो उनके लिए सबसे अच्छी औषधि इस नदी के किनारे का वास है। यहाँ पर शान्ति और एकाग्रता का पाठ पढ़ाया जाता है। एक बार मैं मछली मारने में देर कर गया। मैं 'बीच' के पेड़ों के नीचे बैठ गया। ऊपर घोंसले में चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। आह-भरी साँयसाँय की आवाज सुनाई दे रही थी। उसके साथ और सब सहृदयता प्रकट कर रही थीं। इतने में नदी में लहर आई। वह चट्टानों से टकरा कर लौट गई। सफेद फेन उठ आये। भेड़ों का समूह आया। कुछ तो झुक कर जल पीने लगी, सूर्य के प्रकाश में उछलने-कूदने लगी। भेड़ों के बच्चे मिमियाने लगे। मैं इन्हीं सब तमाशों के देखने में भूल गया'। इस पुस्तक के अन्त में उसने जो कुछ लिखा

है, उसका मानव-जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है। वह लिखता है, "मेरा आदेश है कि तुम धनी होना चाहते हो, तो ईमानदारी के साथ काम करने का प्रयत्न करो। या नहीं तो सबसे अच्छा यही है कि गरीब होकर जीवन व्यतीत करने में ही संतोष कर लो। स्मरण रखो कि न्याय के साथ पैदा किया हुआ धन कुछ रोज के लिए स्थायी हो सकता है अन्यथा वह शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। विद्वानों का कथन है कि जिस मनुष्य ने विवेक-विचार को तिलांजलि दे दी है, वह अमूल्य रत्न खोकर शून्य हो गया। इसलिए प्राण देकर भी विवेक-विचार का साथ रखो। ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें ऐसे लोगों की संगति में रखे जिससे इसकी दिन-दिन बढ़ती होती रहे। संसार में दूसरी आवश्यक वस्तु स्वास्थ्य है। जिसका स्वास्थ्य खराब है, उसकी विचारशक्ति कभी ठीक नहीं रह सकती, स्मरणशक्ति नष्ट हो जाती है। वह शारीरिक और आत्मिक; किसी प्रकार के, काम में सफल नहीं होता। 'दुनिया में घूँसा बलवान' याद रखो। स्वास्थ्य ऐसी वस्तु है जो खरीदने पर भी नहीं मिलती। आचरण से इसका घनिष्ट सम्बन्ध है। धन तीसरी आवश्यक वस्तु है। हम यह अनुमति नहीं दे सकते कि तुम इसकी अवहेलना कर दो; परन्तु हम इतना अवश्य कहेंगे कि धन इकट्ठा करने की धुन सवार न होने पावे; क्योंकि तुम जितना अधिक धनी होते जाओगे, तुममें कंजूसी और तृष्णा की उतनी ही अधिक मात्रा भी बढ़ती जायेगी। तुम्हारे पास जो कुछ धन है, ईश्वर की

कृपा से खाओ, पिओ और उड़ाओ। इधर-उधर की चिन्ता करने से क्या प्रयोजन ?"

आपको डर्बीशायर में बहुत-सी पुरानी इमारतें मिलेंगी। इनमें से अधिकांश ट्यूडर के समय की बनी हुई हैं। उनमें से एक महल का वर्णन हम यहाँ पर करते हैं, जिससे आप समझ जायेंगे कि उस समय किस तरह की इमारतें बनी थीं। चैट्सवर्थ की एक इमारत डर्बीशायर ही क्या, इंगलैण्ड भर में सबसे शानदार है। यह डेवनशायर के ड्यूक का घर है। यहाँ एक घाटी में एक नदी बहती है। उस पर पुल बँधा हुआ है। इसके पास ही एक रमणीय उद्यान है। उसी में यह महल बना हुआ है। पूरब ओर इसके पीछे पर्वत-श्रेणियाँ ऊंची चली गई हैं। उद्यान से वहाँ तक घना जङ्गल लगा है। इस तरह महल से बहुत दूर तक हरा-ही-हरा मैदान नजर आता है।

जिस समय इंग्लैण्ड में रानी एलीजाबेथ का शासन था, उस समय एक बार उसे संशय हुआ कि स्काट की रानी 'मेरी' उसे मारने के लिए उपाय सोच रही है। उसने 'मेरी' को कैद करके पुराने चैट्सवर्थ में भेज दिया। जेम्स द्वितीय के समय में आजकल की इमारत बनी थी; तब से जितने ड्यूक हुए, सभी ने कोई-न-कोई भाग बढ़वा दिया। उद्यान सुरम्य है। अपने ही ढङ्ग का बना हुआ है। महल में चित्रकारी और कला-कौशल की सामग्री भरी पड़ी है। यहाँ पर दुनिया के प्रत्येक भाग की कला से काम लिया गया है।

साहित्यिक मनुष्य पहले 'नोबुलमेन' का आश्रय खोजा

करते थे। यदि उनकी कृपा हुई, तो उनकी किताब का खर्च निकल जाता था। डेवनशायर के ड्यूक इस कार्य में सबसे अधिक सहायता करते थे। तर्क-वेत्ता होब्स कुछ समय उन्हीं के यहाँ रहे। उस समय सन् १६७८ में एक फ्रान्सीसी उनसे भेंट करने गया था। वह लिखता है, "मैं लगभग दो बजे वहाँ पहुँचा। 'अर्ल' ने कहा कि आज आपको होब्स से भेंट नहीं हो सकती, आप देर कर गये। वह और आदमियों की तरह जीवन नहीं व्यतीत करता। वह तो लगभग दो घण्टे पहले ही खा-पीकर अपने पढ़ने के कमरे में चला गया है। वह दिन भर बाहर नहीं निकलेगा और न कोई उसके पास ही जा सकता है। यदि आप उससे मिलने के इतने इच्छुक हैं, तो आप सवेरे मिल सकते हैं; किन्तु वह उठकर बहुत तेजी से पहाड़ी पर चढ़ने लगता है। आप हमारे सबसे तेज घोड़े पर चढ़ जाइयेगा। तब आप उसका पीछा कर सकते हैं। इतना सब करने पर आगन्तुक महाशय को उस महात्मा के दर्शन हुए"। वह कठिन परिश्रम कर रहा था; परन्तु था क्रोध से भरा हुआ।

जब वह भेंट करके लौटा, तब ड्यूक के पास गया। उसने कहा, "श्रीमान् का घर पुस्तकों से भरा है। मुझे भी एक किताब रखने की आज्ञा प्रदान कीजिये। वह 'यूक्लिड' की है। मैंने उसे पढ़ा है; परन्तु मुझे मालूम होता है कि उसने मूर्खतापूर्ण प्रमाण देकर जनता की भलाई करने के बदले बुराई की है।"

डा० जान्सन सन् १७७२ में पधारे थे। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही अच्छा मकान है। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि वहाँ अतिथियों की भीड़ सदा लगी रहती है। सन् १८२६ साल का औसत निकाला गया तो पता चला कि 'चालीस आदमी रोज आकर वहाँ खा जाते थे; लगभग एक सौ पचास नौकर सदा सेवा के लिए तैयार रहते थे।' तब से संसार के बहुत-से बड़े-बड़े आदमी वहाँ से हो आये। उन्होंने यह भली भाँति अनुभव किया कि यहाँ के स्वामी आगन्तुक व्यक्तियों का किस सम्मान के साथ स्वागत करते हैं।

आठवाँ दृश्य

झील का प्रान्त

उत्तरी इङ्गलैण्ड में बहुत बड़े-बड़े पहाड़ और झील हैं। डर्बीशायर से यार्कशायर होते हुए वहाँ तक एक रास्ता गया है। यार्कशायर पहाड़ी प्रान्त है। घाटियों और नदियों की अधिकता है। स्थान जंगली और सूनसान है। दो-चार घरों के गाँव दूर-दूर पर बसे हुए हैं। यार्कशायर में कहीं-कहीं पर बहुत बड़े-बड़े शहर बसे हुए हैं। व्यावसायिक प्रान्त को 'काला देश' कहते हैं, क्योंकि चिमनियों के चलने से धुआँ और काजल भरे रहने के कारण धुँधलाहट-सी छाई रहती है और सभी चीजें गन्दी हो जाती हैं। यहाँ लीड्स और ब्रैडफोर्ड बड़े उन्नतिशील नगर हैं। सारे देश में कोयले की खानें भरी पड़ी हैं। कोयले की अधिकता है। सदा चिमनियों के जलते रहने से सड़क के किनारे कोयले की धूल और राख जमी रहती है। जो-कुछ थोड़े पेड़ हैं वे भी मुरझाये हुए दीख पड़ते हैं। आप रात के समय कहीं बाहर खड़े हो जाइये, वहाँ से आप को चूल्हे और चिमनियों की जलती हुई लपट दिखाई देगी। यहाँ के सभी लोग काले

दिखाई देते हैं। उनके कपड़े भी काले हो जाते हैं। यह देश समुद्र के किनारे के देश से बिलकुल दूसरी तरह के जल-वायु का है। आप ह्विटबाई में चले जाइये। आपको वहाँ इसका सच्चा अनुभव होगा।

जब हम लोग टीले पर खड़ा होकर वहाँ का दृश्य देखते हैं तब देखते हैं कि हवा स्वच्छ और ताजी है, आकाश नीला है, धुआँ आदि नहीं छाया है, समुद्र से ठण्ढी हवा बहकर आनन्द देती है। सामने से एक नाव आती हुई दिखाई देती है जिसमें पीछे मछली फंसाकर लिए आ रहे हैं। मछुवे दूर से इसे जाल में फंसाकर ला रहे हैं। आपको पूरब ओर केवल जल-ही-जल दिखाई देगा। समुद्र का रङ्ग बदलता ही रहता है—कभी भूरा और कभी सफेद दिखाई देता है, कभी हरा या सुनहला। थोड़ी ही देर में सारा जल नीला हो जाता है। जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है तब जल हीरे की तरह चमकता है। जब हवा चलती है, तब लहरें एक के बाद दूसरी आकर टक्कर खाती हैं जिससे सफेद फेन पैदा होता है। ये हलरें किनारे पर जाकर चट्टान से टकराती हैं तब जोरों की आवाज सुनाई देती है। यह शान्त समुद्र और धीमी हवा के समय की दशा है। जब आँधी बहती है, तब लहरें पहाड़ियों के बराबर ऊंची उठती हैं। किनारे पर टकराने से बिजली की कड़क के समान कोसों तक आवाज सुनाई देती है; देश के भीतर तक जल घुस आता है। यदि ऐसे समय कोई जहाज खुले समुद्र में पड़ जाता है तो ईश्वर ही बेड़ा पार लगाता

है। मछुवे समुद्र के निवासी की भाँति रहते हैं। उनको ऐसे समय में भी डर नहीं लगता, समुद्र की हवा खाते फिरते हैं। यदि कोई जहाज डूबता हुआ दिखाई देता है, तो वे 'लाइफ बोट' (प्राण-रक्षक नाव) लेकर पहुंच जाते हैं और उस पर बचे हुए लोगों को चढ़ाकर किनारे पहुँचा देते हैं। इसके लिए कोई कुछ नहीं लेता। ऐसा करना वे अपना कर्त्तव्य समझते हैं; क्योंकि कौन जाने कब किसका भाग्य फूट जाय।

इंग्लैण्ड के किनारे पर बहुत-सी चट्टानें हैं। आँधी या ओले के समय जहाज इनसे टकराकर टूट जाते हैं। उनकी रक्षा का कोई उपाय नहीं था। अब ऐसे स्थान पर घरहरे बन गये हैं, जिससे जहाज वालों को दूर से ही खतरे का स्थान मालूम हो जाता है। वे रास्ता बदल कर अपना जहाज बचा ले जाते हैं। गवर्नमेण्ट की ओर से किनारे पर कुछ ऐसे व्यक्ति रखे गये हैं; जो खतरे में पड़े जहाजों की खबर रखते हैं। जब कोई जहाज डूबने लगता है, तब वे संकेत करते हैं। मछुवे 'लाइफ-बोट' लेकर पहुँते हैं और उनके प्राण बचा लेते हैं।

ह्विटबाई की तरह ऐसे बन्दरगाह पर जितने नगर स्थित हैं, वहाँ सभी लोग मछली मारने का पेशा करते हैं। वे प्रातःकाल अपनी-अपनी नाव लेकर निकल जाते हैं। दिन भर मछली मारते हैं। फिर शाम को लौटते हैं। मिली हुई मछली से जो कुछ मिलता है, उससे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। यदि कहीं मौसम खराब हुआ, तो मछली मिलना

तो अलग रहे, उनका घर पहुँचना भी कठिन हो जाता है। यद्यपि ये इतना कठिन परिश्रम करते हैं, तथापि पर्याप्त धन पैदा करने में सदा असमर्थ रहते हैं। बहुत-सी मछलियाँ मार कर ज्योंहीं किनारे पर लौटते हैं, त्योंही लाई हुई मछलियों को गाड़ी पर लन्दन के लिए पार्सल कर देते हैं।

गर्मी की ऋतु आई। नौकरी करनेवाले छुट्टी पाने पर समुद्र के किनारे स्वास्थ्य सुधारने के लिए आ गये। कुछ लोग स्वच्छ हवा पा रहे हैं, कुछ लोग खारे जल में प्रसन्नता-पूर्वक स्नान कर रहे हैं। लड़के सिकता-मयी भूमि में खेल-कूद रहे हैं। सभी आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

समुद्र के किनारे से हम ज्यों-ज्यों भीतर आते हैं, त्यों-त्यों देश पहाड़ी होता चला जाता है। अन्त में हम सुरम्य स्थान में पहुँच जाते हैं। यही 'झील का प्रान्त' है। यहाँ कवियों की बुद्धि चकराती रहती है। वर्ड्सवर्थ, सदे, कॉलरिज, डे क्विन्से आदि सभी ने इसी के निकट जीवन बिताया है। यहाँ के नाम से जो पद्य संग्रह किये गये हैं, उनमें जङ्गली प्रकृति का वर्णन है। इनको 'लेकस्कूल' के पद्य कहते हैं। ग्रैसमीअर हरे-भरे पहाड़ों से घिरा हुआ जलाशय है। इसके किनारे चरागाह और मनोहर जङ्गल हैं। उसके पीछे एक गाँव दिखाई देता है। वर्ड्सवर्थ और डे क्विन्से यहीं के रहनेवाले थे। पास में चारों ओर पहाड़ियाँ हैं। उनपर एक ओर घास लगी है, तो दूसरी ओर परतदार पत्थर की चट्टानें हैं। घासवाली पहाड़ी पर चरती हुई कुछ भेड़ें

मिलती हैं। कोई ठीक मार्ग नहीं बना हुआ है। जिससे उधर का आना-जाना सहल नहीं है।

लोग गर्मी की ऋतु में इस प्रान्त में हवा खाने के लिए आते हैं; परन्तु जाड़े में यहाँ कोई नहीं ठहरता। कुछ गड़ेरिये या चरवाहे खोह-कन्दरे में छिप कर रह जाते हैं; क्योंकि जाड़े में खूब बर्फ गिरती है। जमीन बर्फ से ढंक जाती है। हवा इतनी ठण्डी होती है कि मालूम होता है, शरीर का प्रत्येक भाग गल कर चू जायेगा। इसी को सहन कर वहाँ के लोग बली और हट्टे-कट्टे होते हैं। यहाँ के रहनेवाले पुराने लकीर-पंथी हैं। उन पर इंगलैंड की सभ्यता की हवा नहीं लग पाई है। ये लोग नवीं शताब्दी से बहुत भिन्न हो गये हैं। पहले के नार्वे वालों के रीतिरस्म में भेद पड़ गया है। उनके बहुत-से स्मारक मिलते हैं। इङ्गलैंड ऐसा देश ही है जहाँ पर आप जगह-जगह पर गड़े हुए पत्थर पायेंगे। यह काम एलिजाबेथ के समय में अधिक हुआ था। उस समय बहुत-से गिरजाघर बनाये गये थे। पर्वत पर जितने स्मारक बने हुए हैं, वे बहुत प्राचीन हैं। वे उस समय के हैं जब लोग शत्रु से बच कर रहने के लिए अधिकतर ऊँचे स्थानों पर रहते थे; जंगल में बिना रास्ता के रास्ते चलते थे। यहाँ आपको शहर से बिलकुल विभिन्नता मिलेगी—आकाश नीला रहेगा, स्वच्छ हवा मिलेगी, चारों ओर शान्ति छाई हुई रहेगी; और कहीं कोई व्यक्ति बात करने तक के लिए भी नहीं मिलेगा।

नवाँ दृश्य

शिक्षा

शिक्षा वह है जो मनुष्य को मनुष्यता सिखावे। यों तो सभी देशों में अनेक प्रकार के मनुष्य हैं। परन्तु जिस देश या राष्ट्र के युवक शिक्षित हैं, वही उन्नति करने में सफल हो सके हैं। इस प्रकार उन्नति चाहने पर शिक्षा देना आवश्यक प्रतीत होता है। किन्तु यह साधारण काम नहीं है। सभी देश शिक्षा देने का यथाशक्ति प्रयत्न कर रहे हैं। सर्वशक्तिमान् आँग्ल-देश ने इसके लिए तरह-तरह के प्रबन्ध किये हैं। बहुत-सी सार्वजनिक पाठशालाएँ खोल रखी हैं, जैसे एटन, हैरो और रग्बी। राजा-रईसों ने इनके लिए स्थायी कोष एकत्र कर रखा है। ये उसी के सूद पर चलते हैं। यहाँ पर केवल धनी-मानी के लड़के ही पढ़ सकते हैं, क्योंकि फीस बहुत अधिक लगती है, जिसको सर्वसाधारण नहीं चुका सकते, और उनको पढ़ने की आज्ञा भी नहीं है। लोगों को इस बात का बहुत घमण्ड रहता है कि उसी स्कूल में बाप पढ़ा, हम पढ़ रहे हैं और हमारे लड़के पढ़ेंगे। इस तरह की शिक्षा से यही लाभ होता है कि लड़कों में यह भाव

जाग्रत हो जाता है कि हमें अपने पूर्व गौरव का ध्यान रखना चाहिये; हमें भी त्यागी और नम्र होना चाहिये; ऐसा कोई काम न करना चाहिये जिससे पूर्वजों के मुख पर कालिमा लगे।

बहुत-सी ऐसी सार्वजनिक पाठशालाएँ हैं जिनमें व्यापारियों या मध्यवित्तों के लड़के पढ़ते हैं। इनका प्रबन्ध जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों की सभा से होता है। यहाँ भी काफी फीस देनी पड़ती है; परन्तु विलासमय जीवन व्यतीत करने की सामग्री का प्रबन्ध नहीं रहता। पढ़ने का प्रधान उद्देश्य यह है कि लड़के स्कूल से निकलने के बाद निःस्वार्थी, उद्यमी और साहसी हों। वहाँ पर तीन महीने का एक क्रम होता है। इस तरह तीन क्रम तक पढ़ाई होती है। इस समय लड़कों को घर जाने की छुट्टी नहीं मिलती। वे चालीस-चालीस करके एक मकान में रहते हैं। एक अध्यापक उनका निरीक्षक होता है। छुट्टियों में सभी लड़कों को अपने-अपने घर जाना होता है। भारतवर्ष की शिक्षा-प्रणाली से वहाँ पर विभिन्नता पाई जाती है। वहाँ नौ वर्ष की उम्र तक लड़के घर पर पढ़ते हैं। इसके बाद तेरह वर्ष की उम्र तक गाँव की पाठशाला में भेजे जाते हैं। वहाँ से अठारह-उन्नीस वर्ष की उम्र तक बड़ी पाठशालाओं में पढ़ाये जाते हैं। यह सब पढ़ाई खतम करके विश्वविद्यालय में प्रवेश करते हैं या कोई व्यवसाय सीखने लगते हैं।

पढ़ाई के समय छुट्टी न देने का नियम लड़कों के हित में

बहुत अच्छा है। वे इस समय अपने से बड़े या छोटे, ऊंची या नीची क्लास के लड़कों के साथ खाते-पीते, उठते-बैठते, खेलते-कूदते और पढ़ते हैं। इस बीच में उनको यह शिक्षा मिलती है कि अपने से बड़ों का सम्मान कैसे करना चाहिये और जो छोटे होंगे उनके साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये। उन्हें इस समय आज्ञा-पालन, स्वार्थत्याग, सच्ची मित्रता, ईमानदारी और उत्साह के लाभों का अनुभव कराया जाता है। जब कभी साथियों में अनबन हो जाती है, तब सभी मिलकर चिढ़ाने लगते हैं। वे अपनी गलती समझकर माफी माँगते हैं और उसे सुधारने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार वे आत्म-विश्वासी और सर्वप्रिय बन जाते हैं। इतनी शिक्षा पाने के बाद जब छुट्टी मिलती है, तब जन्मभूमि का प्रेम और मातृस्नेह उनको झट घर पर खींच लाते हैं।

वहाँ पर लड़कियों को भी शिक्षा दी जाती है। इसके लिए अधिक पाठशालाएं नहीं हैं, क्योंकि उनको घर पर जाकर 'गुरुआइनें' पढ़ाती हैं। जो औरतें पढ़ाती हैं, उनको 'गवर्नेसेज़' कहते हैं।

उक्त सार्वजनिक पाठशालाओं में पढ़ाने पर अधिक खर्च बैठता है। इसलिए उनमें गरीब के लड़के नहीं पढ़ सकते। उनके लिए भी दिन में स्कूल खुलता है। इसका खर्च धनी लोग चलाते हैं। लड़के चौदह वर्ष तक यहीं पढ़ाये जाते हैं। इसके बाद वे दूसरी पाठशालाओं में भेजे जाते हैं जहाँ उच्च शिक्षा दी जाती है।

इंग्लैण्ड में शिक्षा के लिए दूसरा ही प्रबन्ध है। गवर्नमेण्ट कुछ नहीं देती। सभी देश जिलों में टूटे हुए हैं। उसके लिए 'रेट' लगा हुआ है जिसे सभी को मालगुजारी की तरह ठीक समय पर चुका देना पड़ता है। गरीब लोगों से कुछ नहीं लिया जाता। उनके लड़के धनी लोगों के खर्च पर पढ़ते हैं। इस प्रकार देश का एक भी बालक अशिक्षित नहीं रह जाता। वहाँ पर ऐसा नियम है कि गरीब का मेहनती और योग्य लड़का गाँव के स्कूल से शहर के स्कूल तक पढ़ जाता है। फिर छात्रवृत्ति के बल पर विश्वविद्यालय में भी चला जाता है। जनता को यह विश्वास रहता है कि यदि कोई बालक इस प्रकार पढ़ाया जाता है, तो वह शिक्षित होने पर देश की भलाई करेगा। इंग्लैण्ड के बहुत-से बड़े-बड़े लोग पहले इसी तरह के गरीब थे। वे इसी प्रकार की सहायता से पढ़ गये। इंग्लैण्ड में पार्लमेण्ट के प्रधान मंत्री मजदूर के लड़के थे; उन्हें भी इसी तरह शिक्षा मिली थी।

दसवाँ दृश्य

सार्वजनिक पाठशाला का एक दिवस

गर्मी की ऋतु है। जून का महीना आरम्भ हो रहा है। मौसम धीरे-धीरे गर्म होता जाता है। फूल खूब फूले हुए हैं। इसी समय चलिये हम आपको यहाँ के एक छात्रावास का दृश्य दिखाते हैं। इसके सोने के कमरे में बीस चार-पाइयाँ बिछी हुई हैं। उनके बीच में दूरी है। चारपाई और दीवार के बीच के स्थान में मेज है। उस पर घड़े में पानी, साबुन और तौलियाँ रखी हुई हैं। बाहर बरामदे में पहरेदार घूम रहा है। साढ़े छः बज गया। वह जाकर घण्टी बजाता है; अभी तक जो सोये हुए हैं, उनको जगाता है। वे तुरन्त उठकर शौचादि से निवृत्त हो कपड़ा पहनते हैं; सीढ़ी से उतरकर सामने के मैदान से होते हुए बड़े कमरे में इकट्ठा होते हैं। सात बजे तक नीचे दर्जे के सभी लड़के पाठशाला में पहुँच जाते हैं। मानीटर (मुखिया) रजिस्टर से नाम बोलता जा रहा है। नाम आने पर लड़के 'प्रेजेण्ट' (उपस्थित) बोल रहे हैं। अभी तक शोर-गुल भी हो रहा था; परन्तु मास्टर साहब के आते ही सभी

चुप्पी साध लेते हैं। कोई इतिहास पढ़ने लगता है; कोई हिसाब लगा रहा है; तो कोई अँगरेजी की किसी पुस्तक का लैटिन में अनुवाद कर रहा है। बड़े लड़के यहाँ नहीं पढ़ते। उनको दूसरी जगह एक-एक कमरा मिला है।

आठ बज गया। घण्टी बजी। मास्टर लड़कों के साथ दूसरे कमरे में गया। वहाँ जलपान रखा हुआ है। उस कमरे के लड़के अपनी-अपनी जगह पर बैठे हुए हैं। ये आकर बीच में बैठ जाते हैं। उनके प्रतिष्ठित सहपाठी को मेज-कुर्सी मिली है। ये अच्छे आचरण के प्रतिभाशाली लड़के होते हैं। इनको लड़के अपने ही में से चुनते हैं। जब मास्टर नहीं रहता है, तब ये शान्ति और संयम रखने में सहायता करते हैं। सभी जलपान करके बाहर निकले; अपने-अपने कमरे में जाकर पढ़ने लगे। नौ बजा। फिर घण्टी बजी। सभी प्रार्थनावाले भवन में पधारे। वहाँ प्रधानाध्यापक के सामने पन्द्रह मिनट तक सुबह-शाम पूजा-पाठ होता है। इसके बाद लड़के फिर पाठशाला जाते हैं। वहाँ प्रति घण्टे मास्टर पढ़ाने के लिए आते हैं। प्रत्येक घण्टा पचास मिनट का होता है। सवा बारह बजे तक पढ़ाई खतम हो जाती है। लड़के बाहर मैदान में आकर हंसने-खेलने लगते हैं। तीन घण्टे के बाद सुहृद-गोष्ठी को बातचीत करने का यह अवकाश मिलता है। कोई क्रिकेट खेलता है, कोई स्नानागार में तैरने जाता है; कोई टहलना ही पसन्द करता है। फिर सभी एक बजे तक खाने के

लिए इकट्ठा होते हैं। आध घण्टे तक आराम करते हैं। दो बजे घण्टी बजी। पढ़ाई शुरू हुई, जिसका चार बजे तक क्रम जारी रहा। गर्मी के दिनों में एक सप्ताह में तीन दिन से अधिक दोपहर के बाद पढ़ाई नहीं होती। सभी हल्के कपड़े पहन कर खेल के मैदान में आ जाते हैं। कोई क्रिकेट खेलता है तो कोई नाव खेने जाता है। दूसरे खेल बहुत कम खेले जाते हैं। पर खेल खेलना अनिवार्य है। इसलिए लड़के स्वस्थ रहते हैं। दो ओर होकर खेल खेलते समय सभी अपनी-अपनी विजय के लिए प्रयत्न करते हैं। हारने पर किसी को कोई खेद नहीं होता। यही कारण है कि अंग्रेज खेल-कूद के इतने प्रेमी होते हैं।

छः बज गया। सभी जलपान करने के लिए आ गये। चाय पीकर प्रार्थना करने चले। सातका घण्टा बजते ही सभी पढ़ने बैठ गये। साढ़े आठ बजे तक यही क्रम जारी रहा। तब साधारण भोजन करके सोने जाते हैं। बड़े लड़के दस-ग्यारह बजे तक जागते रहते हैं।

छोटे लड़कों को स्वतन्त्रता नहीं दी जाती। उनके साथ एक निरीक्षक लगा रहता है, जिसकी आज्ञा का पालन करना उनका कर्त्तव्य होता है। वे ज्यों-ज्यों बड़े होते जाते हैं, त्यों-त्यों उनके ऊपर उत्तरदायित्व बढ़ने लगता है और उन्हें स्वतन्त्रता मिलने लगती है, क्योंकि उन्हें क्रमशः उचितानुचित का ज्ञान होता जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि स्कूल का नियम बहुत कठिन है। यदि कोई जरा भी उल्लंघन

करता है, तो वह शीघ्र दण्ड का भागी होता है। ये दण्ड अपराध और अवस्था के अनुसार दिये जाते हैं। यदि कोई बालक आलसी है या आज्ञा-पालन नहीं करता, तो उसे शारीरिक दण्ड मिलेगा या उसे अधिक पढ़ना पड़ेगा; नहीं तो बाहर जाना, मित्रों से मिलना आदि बन्द कर दिया जायेगा। दण्ड-ही-दण्ड नहीं है; जो अच्छे हैं, उन्हें इनाम भी मिलता है। जिनका आचरण अच्छा होता है, वे 'प्रिफेक्ट्स' (शासक) बनाये जाते हैं। उन्हें अलग कमरा मिलता है। जो परीक्षा में अच्छा नम्बर पाते हैं, उन्हें पुस्तकें पुरस्कार-स्वरूप दी जाती हैं।

लड़के विद्यार्थी-जीवन में प्रसन्न-चित्त दिखाई देते हैं, किन्तु पढ़ाई खतम करके स्कूल छोड़ते समय उदास हो जाते हैं। उन्हें प्रायः अच्छा नहीं लगता और अफसोस करते रहते हैं कि किसी तरह—फेल ही होकर सही—कुछ दिन और वहीं कटते। प्राचीन छात्र सदा स्कूल की देख-भाल करते हैं; उसकी उन्नति के उपाय सोचते रहते हैं।

ग्यारहवाँ दृश्य

आक्सफोर्ड

इंग्लैण्ड शिक्षा का केन्द्र है। यहाँ बहुत से स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय हैं। आक्सफोर्ड और केम्ब्रिज के विश्वविद्यालय बहुत पुराने हैं। बर्मिङ्घम और मैनचेस्टर में अभी हाल के बने हुए हैं। इनकी उतनी ख्याति नहीं है; इनके नियम और इनकी इमारतें उतनी अच्छी नहीं हैं जितनी उनकी। पढ़ाई भी सबमें एक तरह की नहीं होती।

टेम्स नदी में एक घाटी है। उसमें नीची पहाड़ियाँ हैं। उनके अन्दर चरागाह और झाड़न हैं। इनके बीच में आक्सफोर्ड शहर स्थित है। यदि आप किसी पहाड़ी पर जाँय, तो आपको पत्थर के बहुत से ऐसे मकान दिखाई देंगे जिनके गगनचुम्बी गुम्बज हैं। ये एक शताब्दी पहले के बने हुए आक्सफोर्ड के कालेज हैं। इनके चारों ओर दूकानें और इमारतें बन गई हैं।

आक्सफोर्ड की पढ़ाई के समय हजारों विद्यार्थी उपाधि-पत्र के लिए पढ़ते हुए दिखाई देते हैं। इनमें से बहुतों का

घर तो यहीं है; बहुत से दूर देशों से केवल शिक्षा पाने और कालेज का सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए आते हैं। यहाँ पर पढ़-लिख कर उपाधि पा लेना ही बड़ा काम नहीं समझा जाता, वरन् सबसे आवश्यक पढ़ाई यह है कि विद्यार्थी को यह ज्ञान हो जाय कि किसी के साथ नम्रता के साथ कैसे मिला जाता है; कैसे उठना-बैठना, खाना-पीना और कपड़ा पहनना चाहिये। यदि वहाँ के कालेज से यह शिक्षा निकाल दी जाय, तो वहाँ की पढ़ाई में और जगह से कोई अन्तर ही न रह जाय। आत्म-विश्वास और स्वार्थ-परता का पाठ पढ़ाया जाता है। संगी-साथियों के साथ बातचीत करते-करते आदमी सीख जाता है कि दूसरे कैसे प्रसन्न रखे जा सकते हैं; किसी के दुख में कैसे हाथ बटाया जाता है। विद्वान् और संस्कृत पुरुषों के साथ सदा रहने से विद्यार्थी केवल व्याख्यान ही नहीं सुनते हैं; वरन् संस्कृति से प्रेम करने लगते हैं और उसके मीठे फल का अनुभव करते हैं। इस विश्व-विद्यालय का यह आदर्श है कि यहाँ पर ऐसी शिक्षा दी जाय जिससे विद्यार्थियों में कठिन साध्यों को सिद्ध कर सच्चा न्याय करने की शक्ति आ जाय, और वे आपदा में अपनी तथा सहपाठियों की सहायता कर सकें।

आक्सफोर्ड में पढ़ाई के लिए हर-एक साल के तीन विभाग किये जाते हैं। प्रत्येक विभाग आठ सप्ताह का होता है जिसको 'टर्म्स' कहते हैं। मैट्रिक्युलेशन परीक्षा पास



ऑक्सफोर्ड में नदी का एक दृश्य

करके कोई विद्यार्थी इस विश्व-विद्यालय में नाम लिखा सकता है, या यदि कोई विद्यार्थी इस कालेज की प्रवेश-परीक्षा पास कर लेता है; तो वह भी भर्ती कर लिया जाता है। वह चार साल तक इस कालेज का सदस्य बन कर रहता है। अध्यापक पढ़ाते और देख-भाल करते हैं, जिनकी आज्ञा का पालन करना उसका कर्तव्य है। अन्त में इच्छित उपाधि की परीक्षा देकर वह पढ़ाई समाप्त करता है।

इन चार वर्षों तक उसे नियमित रूप से निश्चित काम करना पड़ता है। उसे सबेरे व्याख्यान सुनना होता है, अध्यापक के पास जाना पड़ता है जो बतलाता है कि आप अमुक किताबें घर पढ़ कर आइयेगा और कल का दिया जो काम करके लाये हैं दिखलाइये। दोपहर के बाद सभी को खेलना पड़ता है। नाव खेने पर अधिक जोर दिया जाता है। गर्मी में नावों की दौड़ होती है। कालेज का प्रत्येक लड़का इसमें अवश्य भाग लेता है। हर एक नाव पर आठ खेने वाले लड़के चढ़ जाते हैं। यह काम सप्ताहों तक चलता रहता है। इसलिए इस दौड़ के सप्ताह को 'एट्स वीक' कहते हैं। इस समय नदी के किनारे पर लोगों की भीड़ लगी रहती है। संगी-साथियों की बड़ी भीड़ लगती है। इन दिनों खूब भोज हुआ करते हैं।

प्रत्येक कालेज में कई कमरे बने होते हैं। कहीं पुस्तकालय है, तो कहीं उभयनिष्ठ कमरा जिसमें सभी लोग मिलते हैं, प्रतिद्वन्द्विता-समिति की बैठक होती है और समाचार-पत्र पढ़े

जाते हैं। बीच में बड़ा कमरा होता है जहाँ संध्या को सभी भोजन करते हैं। संध्याभवन में प्रातःसायं प्रार्थना होती है।

यहाँ विद्यार्थियों को पढ़ने के सिवा और भी काम करने होते हैं। वे सभा में जाते हैं जहाँ तर्क-शास्त्र का ज्ञान बढ़ता है, नाटक इत्यादि खेलने की आयोजना की जाती है। इससे उनकी वक्तृत्वशक्ति एवं धारणा-शक्ति में अभिवृद्धि होती है।

कालेज की इमारतें बहुत सुन्दर हैं। दीवारें भूरे पत्थर की बनी हुई हैं। उन पर चित्र और मूर्त्तियाँ अङ्कित हैं; लताएँ फैली हुई हैं जो शरद-ऋतु में लहलहाती और फूलती हैं। बहुत-से कालेजों के सामने उद्यान लगे हुए हैं जिनमें सैकड़ों वर्ष के बड़े छायादार पेड़ खड़े हैं, जिनके नीचे बैठने पर गर्मी में शीतल हवा का आनन्द मिलता है, वाद-विवाद होता है। जो छात्र वहाँ के भूतपूर्व विद्वानों (जो चलते-फिरते, बात-चीत करते सैकड़ों वर्ष तक काम करते रह गये) के विषय में कुछ भी नहीं सोचते, उनको वहाँ रहने से कुछ लाभ नहीं होता। उनका कर्त्तव्य है कि वे पुराने लोगों के परिश्रम की ओर ध्यान दें जिन्होंने वहाँ के पुस्तकालय तक को हृदयंगम कर डाला था, जो ऐसे सुन्दर महल बना कर करोड़ों की सम्पत्ति छोड़ गये। इस प्रकार विद्यार्थी सौन्दर्यो-पासक बन सकते हैं। उनमें नम्र होने की उत्कण्ठा हो सकती है, विद्वत्ता आ सकती है। इन स्मारकों को सामने देखते ही विद्यार्थी के दिल में यह भाव जाग्रत होता है कि हम भी

अपने पूर्वजों की तरह हों और अपने उत्तराधिकारी को भी शिक्षा दें।

बरमिङ्घम

आपने दक्षिणी-पूर्वी इङ्गलैण्ड का पर्याप्त अध्ययन कर लिया। अब आपको ऐसे देश का वर्णन बतलाया जाता है जिसमें जाने पर आपको कान-ही-कान देख पड़ेंगे। यहाँ तक पहुँचने के लिए आपको आक्सफोर्ड में एक ट्रेन मिलेगी जो आपको इस देश के केन्द्रस्थान बरमिङ्घम में उतार देगी। इस शहर तक पहुँचने के पहले आपको इसका अधिक ज्ञान हो जायेगा कि यहाँ कलकारखानों और चिमनियों का इतना काम लगा रहता है कि उनसे उड़कर जमे हुए कोयले से सारा देश काला-सा हो गया है। हवा भी कोयले के कण से लदी हुई धुँधली दिखाई देती है। इसी 'काले देश' का कारोबारी केन्द्रस्थान बरमिङ्घम है। यह इंगलैण्ड में आकार-प्रकार और जनसंख्या के विचार से चौथा नगर है। संयुक्त राज्य में इसका पाँचवा स्थान है। यह वारविक प्रदेश के बिलकुल उत्तर-पश्चिम में बसा हुआ है। यदि आप लन्दन से सीधे चले जाँय, तो आपको १०० मील की यात्रा समाप्त करनी पड़ेगी और 'नार्थ-वेस्टर्न रेलवे' से ११२ मील का व्यवधान नापना पड़ेगा।

यह नगर न्यू रेड सैण्डस्टोन के स्थान पर बसाया गया है। इसकी स्थिति मनोहर है। विचारा जा सकता है कि उस नगर का दृश्य कैसा होगा जो समुद्र की सतह से दो

सौ फीट से बढ़ते-बढ़ते छः सौ फीट की ऊँचाई तक चला गया है। इसकी चढ़ाई दक्खिन-पूरब से |उत्तर--पश्चिम की ओर है। इसकी बनावट देखते ही अर्द्धचन्द्राकार का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। मकानों पर की चिमनियाँ ऊपर उठकर संकेत-मात्र से अपना परिचय कराती हैं। दक्खिनी-पश्चिमी ढाल पर जंगल लगा हुआ है। शहर का धरातल असमतल है। प्रायः सड़कें टेढ़ी-मेढ़ी घूमी हुई हैं। उनमें से अधिकांश तो बहुत तंग बनी हुई हैं। शहर इतना कारोबारी है कि किसी तरह से चौक में एक बड़ा खुला हुआ मैदान रख छोड़ा गया है। इसको 'बलरिंग' और 'हाईस्ट्रीट' कहते हैं। इसके किनारे पर ही सेण्टमार्टिन की माता का गिरजाघर है जिसमें मार्केटहाल की बनावट ऐसी निराली है कि उसकी शान के सामने ब्रिटिश-राज्य का कोई भवन नहीं ठहर पाता है। यह अपने ढङ्ग का एक ही है।

यहाँ से विचित्र ढङ्ग से नाचती हुई 'न्यू स्ट्रीट' ढुलकती है। आधे मील के बाद इसके दोनों ओर शहर के प्रसिद्ध भवन—इक्सचेञ्ज, ग्रामर स्कूल, थियेटर रायल और रायल सोसाइटी आफ़ आर्टिस्ट-भवन आदि अपनी शोभा से दर्शकों का मन लुभाते हैं, आखें आकर्षित कर लेते हैं और जादू का-सा प्रभाव डाल देते हैं। और आगे जाने पर टाउनहाल और पोस्ट-आफिस मिलते हैं। पोस्ट-आफिस ने केवल पचीस वर्ष में ही जनता की इतनी सेवा की कि वह सब का प्यारा बनकर मालामाल हो गया। इसके

आसपास सभी सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। शहर में पुराने और गरीबों के घर छोड़कर सभी क्रमागत उन्नति में सम्मिलित हो गये हैं। धनी वर्ग के निवासी एड्गबैस्टन के महल्ले में रहते हैं। यहाँ पर सभी को निश्चित क्षेत्रफल के अन्तर्गत अपना काम निकालना पड़ता है। गरीबों का मकान जिस सड़क के किनारे रहता है; वहाँ रात-दिन शोरगुल मचा रहता है। बेचारे क्या करें? उन्हें एक छोटी कोठरी के अन्दर उठना-बैठना और सोना पड़ता है। वे कुछ साफ हवा के लिए सड़क से बरामदे का काम लेते हैं। बहुत से ऐसे भी मकान हैं जिनके आगे छोटी सी फुलवाड़ी लगाने की जगह मिल जाती है। सभा में काम करनेवाले उसी में इधर-उधर से काम चला लेते हैं। यहाँ पर ३६०,००० मनुष्यों के लिए केवल ७६००० ही मकान हैं। यह शहर जन-संख्या में दिन-पर-दिन इतनी द्रुत गति से उन्नति कर रहा है कि दो सौ वर्षों में १७००० से ३६०००० हो गया। भविष्य ईश्वर के हाथ में है। यदि सृष्टि की यही दशा रही तो यह कभी लन्दन से भी नम्बर मार ले जायगा।

बरमिङ्घम में धार्मिक संस्थाएँ और सभाएँ असंख्य हैं। ये जनता की भलाई के लिए अनवरत परिश्रम करती हैं। लोग भूखे को भोजन, अशरण को शरण, अन्याय से दण्ड पाये हुए कैदी को आश्रय, बोर्ड के स्कूल में धार्मिक शिक्षा तथा धाई और नौकर को सेवा-वृत्ति की शिक्षा देना अपना मैत्रीपूर्ण कर्त्तव्य समझते हैं।

यहाँ भी धनी-मानी जनता दीन-दुखियों, लँगड़े-लूलों और रोगियों के दुख में समवेदना प्रकट करके सहयोग देना अपना प्रधान धर्म समझती है। यही कारण है कि यहाँ जगह-जगह पर औषधालय बने हुए हैं। कीन्स अस्पताल, चिल्ड्रेन्स (बालकों के) अस्पताल आदि इसके उदाहरण-स्वरूप हैं। उनका व्यय दान, चन्दे और नीलाम किये हुए माल से आता है। इनका वार्षिक व्यय लगभग ३००० पौण्ड है। जनता ने इसके प्रबन्ध के लिए समय नियत कर दिया है। गिरजाघर से साल के हर-एक इतवार को चन्दा लेकर ५००० पौण्ड देना पड़ता है। मजदूर-दल शनिश्चर को दान करके ४००० पौण्ड एकत्र कर लेता है। इस प्रकार सौ के जूठन से एक का पेट भर जाता है जो फिर उसी की सेवा के लिये दृढ़ रूप से तैयार हो जाता है। इसी प्रकार सैनिटोरियम, अनाथालय, क्लब और अन्य संस्थाएँ बनी हुई हैं।

यहाँ पर अनेकों स्कूल और कालेज हैं जिनमें लड़के मनचाहे विषय का अध्ययन करते हैं। पुस्तकालय में विद्यार्थी और सभी पढ़े-लिखे आदमी जाकर समाचार-पत्र और पुस्तकें निःशुल्क पढ़ा करते हैं।

यहाँ आठ तालाब, चार क्लब हैं। तीन दैनिक पत्र सुबह के समय और दो सायङ्काल में निकलते हैं। तीन साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होते हैं।

यहाँ पर स्मृति के लिए समाधियाँ बनी हुई हैं। उनमें

नेल्सन आदि के स्मारक गड़े हुए हैं जिन्हें देखकर हृदय में वीरत्व और उत्साह की भावनाओं की लहरें उमड़ने लगती हैं।

आप नगर को देखते ही बहुत आसानी से अनुमान कर सकते हैं कि यह प्राचीन काल से ही धातु-सम्बन्धी कार्य का स्थान रहा है। आपको यह सुन कर आश्चर्य होगा कि यही शहर है जिसने उन व्यवसायों को पहले जन्म दिया था जो आज इङ्गलैण्ड की उन्नति में दाहिनी भुजा बने हुए हैं। सन् १७६७ तक केवल यहीं स्टील का और १७३० के पहले सूती कपड़े का कार्यालय खुला हुआ था। आजकल स्टील का काम विभिन्न रूप से हो रहा है। पीतल के कारखाने से १०००० मजदूरों का जीवन-निर्वाह होता है। लोहे से कम काम निकलता है; परन्तु जौहरी, सोने और चाँदी की दूकानें आपको हर जगह दिखाई देंगी।

आप और आगे बढ़ जाने पर देखेंगे कि आपके काम की सभी चीज—सूई से लेकर तलवार तक—यहाँ बन रही हैं। यहाँ पर उन्नति करने का अवसर सभी को दिया जाता है। देखिये, यह आदमी सूई बेचनेवाले से 'फैक्टरी' वाला बन गया है।

यहाँ पर आप सबसे विचित्र बात यह पायेंगे कि सभी आत्मबल पर भरोसा करते हैं। उन्हें अपने गौरव का ध्यान रहता है। उनमें स्वामी और सेवक का अभिमान या घृणा नहीं रहती है। यही कारण है कि वहाँ पर आपको हड़ताल का नाम बहुत कम सुनाई देगा। यदि कहीं

इसकी हवा बह जाती है, तो वह भी मित्रता के भाव से सन्धि करके शान्त कर दी जाती है।

सारांश यह कि बरमिङ्घम कारबार और सम्पत्ति-सौन्दर्य सभी में उच्चासीन के निकट स्थान पाने वाला है। इसकी अगम्य उन्नति पर गर्व करना इसके निवासियों का स्वत्व है।

शेफ़िल्ड

आपने अब तक बरमिङ्घम के विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया। यहाँ से रेल पर चढ़ने पर आप सीधे उत्तर की ओर जाइयेगा। यार्कशायर के वेस्टराइडिङ्ग में एक सुसज्जित नगर दिखाई देगा। यह शेफ़िल्ड है जिसका नाम हमेशा सुना करते थे। यह इस प्रान्त का दूसरा स्थान है। अपनी कला में यह इङ्गलैण्ड का सिरताज है। लन्दन से ग्रेट नार्दर्न रेलवे पर सवार होने पर आपको एक सौ बासठ मील की दूरी तय करनी पड़ेगी। आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि पहाड़ी पर बसे हुए इस नगर की स्थिति ऐसे सुरम्य स्थान में है जहाँ डान, शीफ और पोर्टर आदि नदियों की भीड़ लगी रहती है। प्राकृतिक सौन्दर्य की उपासना सरलता से हो जाती है।

पुराने चौक में चले जाइये। वहाँ आपको उभड़े हुए अनियमित मकान मिलेंगे। सड़कें पतली और घुमाव वाली होंगी। कहीं-कहीं आबादी बहुत घनी जान पड़ेगी। परन्तु नई सृष्टि की ओर दृष्टिपात कीजिये। आपको आकाश-

पाताल का अन्तर जान पड़ेगा। एक लाख के व्यय से बनी हुई सड़कें चमचमाती हुई मतवाली-सी देख पड़ेंगी। सुरम्य स्थानों में विशाल भवन स्तम्भित होकर आपको ललचायेंगे। पास ही दीनों की झोंपड़ी के निकट भी उद्यान का दृश्य हृदय को प्रफुल्लित करता रहेगा।

आपको सेण्टपिटर का वर्गाकार बनाया हुआ महल देख पड़ेगा। आजकल इसकी आकृति आयताकार है। यह गिरजाघर अधिक कोष लगाकर भी सुरक्षित रखा गया है; क्योंकि इसमें स्मारक बने हुए हैं जो पूर्वपुरुषों की स्मृतियाँ समक्ष रखते हैं।

आपको शहर में ग्रामर स्कूल मिलेगा। यह टेकनिकल हाई स्कूल है। इसके कालेज-क्लास के छात्र बूमहाल-पार्क में पढ़ते हैं। यहाँ कला-कौशल आदि के अनेकों शिक्षालय मिलेंगे। जगह-जगह पर सभा-भवन, अस्पताल, पोस्ट-आफिस और पत्र-कार्यालय दिखाई देंगे।

आप और आगे चले जायँ, तो आपको बहुत से ऐसे उद्यान मिलेंगे जहाँ जनता जाकर स्वतन्त्रता-पूर्वक नित्य-प्रति हवा खा सकती है। पश्चिमी भाग में वेस्टन का उद्यान और विचित्रालय मिलेगा जहाँ प्राचीन वस्तुएँ, पुस्तकें और हथियार रखे हुए हैं। इसी प्रकार छोटे-बड़े अनेक बाग मिलेंगे। आप जहाँ चाहिये चले जाइये, वहाँ आपका सप्रेम स्वागत होगा।

शेफ़िल्ड का कारबार देखकर आप पता लगा सकते हैं

कि इसकी उन्नति का एक-मात्र कारण इसके स्टील का व्यवसाय और उसका अनेकों प्रकार से उपयोग है। सप्रमाण कहा जाता है कि लोहे के स्वच्छ करने का काम रोम वालों के समय से चला आता है। चाकू आदि बनाने का काम चौदहवीं शताब्दी से चला आता है। आजकल यहाँ पर आपको कवच, रेल, टायर, इञ्जिन और संगीन के कार्यालय मिलेंगे। कतरने वाली चीजों के सभी तरह के कारखाने पा सकते हैं। यहाँ छुरा, कैंची, चीर-फाड़ के औज़ार, गणित के औजार, आरी, हँसुआ, फावड़ा और चूल्हे का व्यापार बहुत अधिक मिलेगा। और आगे जाने पर कहीं चमड़ा पकाया जाता हुआ दिखाई देता है, तो कहीं पर साइकिल बन रही है; कहीं कंघियाँ बन रही हैं, तो कहीं आँख बनाने के औजार तैयार किये जा रहे हैं।

सारांश यह कि यह शहर आपको ऐसा देख पड़ेगा कि आप भारतवर्ष के सब शहरों के कारोबार का संग्रह पा जायेंगे। आप जहाँ-कहीं चले जाइये, आपको सभी लोग किसी-न-किसी तरह की कारीगरी करते हुए मिलेंगे। कोई भी भारतवासियों की तरह बैठकर पान खाकर थूकता हुआ और व्यर्थ के बकवाद या गपशप में दिन बिताता हुआ नहीं मिलेगा। आपको बहुत से तो ऐसे दूकानदार मिलेंगे जो पूरे विद्वान् जान पड़ेंगे। आप इनको देखकर चकित हो जायेंगे कि जब यहाँ के दूकानदारों की यह दशा है तो यहाँ के प्रोफेसरों की क्या हालत होगी। परन्तु यह आपका

निरा भ्रम है। भारतवर्ष की कूप-मण्डूकता का भाव छोड़ दीजिये। यह स्वाभिमानी अंग्रेज-जाति का नगर है। ये लोग अनुभवी प्रोफेसर हैं। इन्होंने वृद्धावस्था में—परिपक्वावस्था में यह व्यवसाय हाथ में लिया है। इनके लिए वृद्धावस्था भी अवकाश नहीं देती। ये एक काम से छूटकर झट दूसरे काम पर लग जाते हैं। जब तक भारतवर्ष की जनता में भी यही भाव नहीं भर जायेगा और वह बीसवीं शताब्दी में दूसरे देशों का सामना करने के लिए कटिबद्ध नहीं हो जायेगी, तब तक भारत तबाही में ही रहेगा।

लिवरपूल

आप आन्तरिक देशों का वर्णन पढ़ते-पढ़ते थक गये होंगे। अतएव मैं आपको अब फिर समुद्र की हवा खिलाकर आगे यात्रा करने की अनुमति दूँगा। शेफिल्ड में रेल से और मर्सी नदी से तटस्थ बन्दरगाह पर उतर जाइये। इसको देखते ही आपको लन्दन का पुनः स्मरण हो जायेगा। यह पश्चिमी समुद्र-तट पर बसा हुआ लिवरपूल है। इङ्गलैण्ड के लैंकास्टर-प्रान्तान्तर्गत, समुद्र से तीन मील इधर ही, प्रधान शहर और बन्दरगाह है। इस शहर की विख्याति का कारण इसकी स्थिति है। मर्सी नदी के किनारे बसा हुआ असमतल अर्द्धवृत्ताकार है।

यह लिवरपूल का निचला भाग है। यहाँ की मुलायम मिट्टी से ईंटें बनाई गई हैं। कहीं-कहीं पर बालू के ढूहे ढाई

सौ फीठ तक ऊंचे हैं। इस प्रकार शहर ऊंचा नीचा बसा हुआ दिखाई देता है।

शहर को देखने से विदित होता है कि इसने जीर्णावस्था में अपनी काया पलट दी है। यह नये आवरण से पूर्णरूप से ढक गया है। चर्च स्ट्रीट, बोल्ड स्ट्रीट आदि के किनारे की दूकानों की ओर देखिये। इनका प्रबन्ध लन्दनवाली दुकानों की तरह है। शहर के व्यवसायी विभाग की ओर पधारिये। यहाँ सरकारी और जनता के दफ्तर मिलेंगे। पत्थर के बने हुए आफिस सड़क के दोनों ओर आमने-सामने तड़क-भड़क दिखा रहे हैं। इनकी बनावट इटली की रीति के अनुसार है। आज-कल के बने हुए 'कोर्ट' (कचहरी) में खिड़कियाँ बहुत कम हैं।

अब आप ऐसे स्थान पर पहुँच गये जहाँ शहर की जनता के बाग बने हुए हैं। यह कैसा रमणीक स्थान है! यह शहर का पूर्वी भाग है। उद्यानों की कतारें दर्शक-वृन्दों की भीड़ लगाये रहती हैं। सबसे पहले हम लोग 'प्रिन्सेज पार्क' में पहुँच गये हैं। और आगे बढ़ने पर उत्तर-पूर्व की ओर 'सेफ्टन पार्क' मिलता है। यह चार सौ एकड़ का उद्यान चार लाख पौण्ड के व्यय से बना हुआ है। इसके किनारे नागरिकों का भवन बना हुआ है।

कैसिन सड़क के पास इसका सबसे अधिक भड़कीला मकान 'टाउनहाल' भी मिलेगा। यह आयताकार पत्थर का 'कारिन्थियन' तर्ज पर बना हुआ है। इसमें सरस्वती की मूर्ति

रखी हुई है। इसके उत्तर ओर 'इक्सचेञ्ज' का विशाल भवन है। थोड़ी दूर पर सेण्ट आर्ज का हॉल मिलेगा। उसके सामने पुस्तकालय, विचित्रालय और चित्र-कला-भवन चमकते हुए दिखाई देते हैं।

यहाँ इधर-से-उधर रेल-गाड़ियाँ दौड़ती हुई नजर आती हैं। अब मर्सी के नीचे सुरंग बनाई जा रही है जो इस काम में अधिक सहायता देगी।

यह देखिये लिवरपूल हाई स्कूल है। इसका कालेज शा-स्ट्रीट पर मिलेगा। यहाँ यूनिवर्सिटी कालेज और विक्टोरिया कालेज बने हुए हैं।

यहाँ पर मनोरञ्जन का पूरा प्रबन्ध है। निवासी दिन-भर काम करने के बाद दिल बहलाने के लिए कहीं-न-कहीं रमणीक स्थान ढूँढ़ने निकलते हैं। इधर ये सिनेमा, थियेटर वाले अपनी बिजली बत्ती से तमाशा दिखा रहे हैं। फिलहारमोनिक थियेटर सबसे अच्छा है।

लिवरपूल की महत्ता उसके व्यापार में है। इसका वर्णन सुनते ही आप ब्रिटिश-साम्राज्य के केन्द्र लन्दन को भी भूल जायेंगे। यदि लन्दन में एक जहाज २४० टन माल लादता है तो यहाँ पर ४४० टन। लन्दन में आपने देखा था कि चाय, रेशम, नील और अंगूरी शराब आदि भोग-विलास की सामग्री का निर्यात अधिक था; परन्तु लिवरपूल को आप दूसरी मस्ती में पा रहे हैं। यहाँ अन्न और कच्चा पदार्थ शराब बनाने के लिए मँगाया जा रहा है। यहाँ के जहाजों की संख्या

की तुलना लन्दन के बन्दरगाह में ठहरे हुए जहाजों से कीजिए। इसकी प्रसिद्धि इसीसे ज्ञात हो जाती है। यह इस काम में संसार में सर्वप्रथम है। इङ्गलैण्ड को इससे सबसे अधिक चुङ्गी मिल रही है। यहाँ से अमेरिका के कोने-कोने में पहुँचने के लिए जहाज छूटते रहते हैं। ये अथाह महासागर की ठोकरें खा रहे हैं।

आइये, बाजार का भी कुछ हाल जान लें। यहाँ रूई-ही-रूई दिखाई देती है। अमेरिका और आस्ट्रेलिया से आये हुए अनाज बिक रहे हैं। हवाना की तम्बाकू गमक रही है। ऊन और शाल की दुकानें सजी हुई हैं। यहाँ घड़ियाँ और क्रानोमिटर बन रहे हैं तो वहाँ बर्त्तन पर नक्काशी की जा रही है। जहाज बन रहे हैं और पास ही चीनी साफ की जा रही है। इस प्रकार आपको अनेकों ऐसे स्थान मिलेंगे जिनका काम देखकर आप अनुमान कर सकते हैं कि इंगलैण्ड संसार में इतना प्रभाव और प्रतिभाशाली क्यों बना हुआ है। इसके व्यापार को देखकर तो आप संसार के विभव के भ्रम में पड़ जायँगे।

लिवरपूल की इस महत्ता, छटा और कला-कुशलता का एक-मात्र कारण मर्सी नदी की इश्चुअरी डाक का प्रबन्ध और चैनल है।

मैनचेस्टर

लिवरपूल से एक ट्रेन आपको फिर देश के अन्दर लायेगी। आप ऐसी जगह पर पहुँच जायँगे जो लिवरपूल

से बिलकुल विभिन्न मालूम होगा। वह लङ्काशायर का प्रान्त है। उसके प्रसिद्ध शहर मैनचेस्टर का दृश्य आपके सम्मुख आ गया है। यह समस्त सभ्य संसार में व्यापार के विचार से बहुत प्रसिद्ध स्थान है जो प्रान्त के दक्षिणी-पूर्वी पार्श्व में स्थित है। ब्रिटिश रूई के प्रान्त के नगरों और ग्रामों का यह केन्द्र-स्थान है। समतल मैदान में अनेकों नगर बसे हुए मिलेंगे। उत्तरी भाग की भूमि ऊँची होगी। इरवेल, मेडलाक, इर्क और टिब आदि नदियाँ इसके चारों ओर मिलें भी, तो सड़कों और गोदामों से घिरी हुई बहती रहेंगी। मैनचेस्टर से शालफोर्ड अलग होने के पहले इरविल को अनेकों पुलों का भार छाती पर वहन करना पड़ता है। मैनचेस्टर में आप ईंटों के बने हुए जितने मकान देखेंगे, उन सबकी ईंटें यहीं की मुलायम मिट्टी से तैयार की गई हैं।

शालफोर्ड का पील पार्क सबसे अच्छा देख पड़ेगा। यह शहर के पश्चिम और इरविल से यात्रा करते समय आँखों के सामने आयेगा। इसके मध्य में एक शानदार महल मिलेगा जिसमें पुस्तकालय, प्राकृतिक इतिहास का विचित्रालय और लाङ्गवर्दी चित्रालय मिलेगा। क्वीन्स पार्क, फिलिप पार्क आदि भी सुरम्य हैं।

इन सबों को देखकर ही मैनचेस्टर के दृश्य का अन्त मत समझ लीजियेगा। वहाँ जगह-जगह प्राचीन काल के वीर-वीराङ्गनाओं के स्मारक बने हुए हैं। महारानी

विक्टोरिया, क्रामवेल और राजकुमार कानसर्ट के स्मारक बहुत अच्छे स्थान पर सुशोभित हैं।

मैनचेस्टर में जितने मकान देखेंगे, उनमें 'सरकारी-इनफरी' आपको सबसे अधिक पसन्द आयेगा। 'इक्सचेञ्ज हाउस' का दृश्य मङ्गलवार, शुक्रवार को देखने पर अच्छा मालूम होगा जब क्रय-विक्रय करनेवालों की भीड़ लगी रहेगी।

मैनचेस्टर में रेलवे का जाल बिछा हुआ है। विक्टोरिया, लन्दन रोड और सेण्ट्रल तीन स्टेशन प्रधान हैं। आमनीबस हमेशा इधर-से-उधर दौड़ते हुए मिलेंगे। आजकल दो पेन्स दे दीजिये, ट्रामगाड़ी शहर के किसी भाग में पहुँचा देगी। इसी प्रकार आस-पास के गाँवों से दौड़ती हुई इस प्रकार की सवारियों की भीड़ दिखाई देगी।

आपको बहुत से गिरजाघर मिलेंगे। कैथेड्रल सबसे बड़ा है। उसमें बहुत से पादरियों की अध्यक्षता में धार्मिक काम होता रहता है।

यहाँ पर आपको साहित्य और विज्ञान की उन्नति के लिए कितने ही सम्मेलन मिलेंगे। साहित्यिक एवं दर्शन-शास्त्र-सम्बन्धी सभा मिलेंगी जिसने देश की खूब सेवा की है। 'लिटरेरी क्लब' और 'वैज्ञानिक विद्यार्थी सभा' आदि अनेकों ऐसी सभाएं बनी हुई हैं जिनसे आबाल-वृद्ध-वनिता सबकी उन्नति होती रहती है और सबको विद्या की उन्नति में हाथ बंटाने का अवसर मिल जाता है। आपको मैनचेस्टर

ग्रामर स्कूल, ओवेन्स कालेज और अनेकों स्कूल मिलेंगे। पुस्तकालय और विचित्रालय भी जगह-जगह मिलेंगे जिनमें किसी तरह की रुकावट के बिना आप अन्दर प्रवेश कर सकते हैं। चेथम पुस्तकालय यूरप में सबसे प्राचीन समझा जाता है। यहाँ पर समय की पुस्तकें मिलेंगी।

आपको पहले बतलाया जा चुका है कि मैनचेस्टर की समस्त ख्याति उसके ब्रिटिश रूई के व्यापार का केन्द्र होने से है। अब इस नगर की प्रवृत्ति व्यापार की ओर पूर्णरूप से झुक गई है। आपको अब जितने कल-कारखाने मिलेंगे, वे सभी शहर के बाहर गाँवों में रहेंगे। उनके स्थान पर विभिन्न विभागों के आफिस बने हुए हैं। यह गोदाम और दुकान से भर गया है जहाँ सरलता से सुखमय जीवन व्यतीत करना लभ्य है। आप कह देने से इसको सूती कपड़े ही का स्थान मत समझ लीजिये, यह ऊन और रेशम का भी उसी प्रकार व्यापार करता है। इसकी मातदिल आब-हवा इस कार्य में बहुत सहायता देती है। यहाँ का कपड़ा अच्छा तो होता ही है, साथ ही ब्रिटिश साम्राज्य का जगद्व्यापी विस्तार इसका सहायक है। थोड़े ही दिनों में इसने संसार को मात कर दिया था। कदाचित् कोई भी भाग इससे आने-जाने का सम्बन्ध स्थापित किये बिना शेष नहीं रह गया था। भारत के विदेशीवस्त्र-बहिष्कार ने इसकी कमर तोड़ कर इसको बैठा दिया है।

लीड्स

मैनचेस्टर से उत्तर जाने पर आपको यार्कशायर के प्रान्त में वेस्टराइडिंग विभाग मिलेगा। इसी में लीड्स का नगर मिलेगा जो इङ्गलैण्ड में जन-संख्या के विचार से पाँचवाँ है। यह वेस्टराइडिंग के मध्य में एयरे नदी की सुरम्य घाटी में बसा हुआ है। वुडहाउसमूर की शिखा पर चढ़ जाइये, वहाँ से प्रान्त भर में सबसे अच्छा रमणीक स्थान लीड्स ही दिखाई देगा। व्यवसाय और व्यापार की दृष्टि से इसकी स्थिति बहुत सहायक है। यह इङ्गलैण्ड के रेलवे लाइन का चारों ओर से केन्द्र है। इसके पश्चिम ओर लिवरपूल का बन्दरगाह है जहाँ से आप हो आये हैं। इसी प्रकार पूर्व ओर हल है। लीड्स में लीड्स और लिवरपूल नहरें मिलेंगी और एयेरे जल-मार्ग जो हल तक जाता है। इस प्रकार यह कम खर्च पर दूर-दूर देशों का कच्चा माल पा जाता है। इसकी स्थिति इससे अधिक अच्छी कोयले के प्रान्त का केन्द्र होने में है। इस प्रकार सभी तरह की आवश्यक वस्तुएं इसके हाथ में हैं। यही कारण है कि यह ऊन और छालटी का कपड़ा अधिक बना रहा है। लोहे का काम और कल-पुर्जे के कारखाने यहाँ अधिक हैं।

आप सब जगह कपड़े का व्यवसाय अधिक पायेंगे। यहाँ पर जो कपड़ा तैयार किया जाता है, वह इंगलैण्ड के

पश्चिमी भाग में बने हुए कपड़ों से भिन्न होता है। गाँव के लोग सूत बनाकर बाजार में बेंचते हुए मिलते हैं। लीड्सवाले इसको खरीदकर कपड़ा बुनकर तैयार कर देते हैं। पहले कपड़ा बेंचने का ऐसा अच्छा प्रबन्ध नहीं था। नगर में दो हॉल बने हुए हैं। इनमें कपड़ा बनाने और खरीदनेवाले एकत्र होते थे। वे बहुत प्रतीक्षा के बाद माल से छुटकारा पाते थे। परन्तु अब आपको उस तरह का कोई हॉल नहीं मिलेगा। आप अपने मकान पर बैठे-बैठे कपड़े का भार, रंग और गुण लिखकर आज्ञा दे दीजिये। कपड़ा बनानेवाला आपके घर वैसी ही उतनी चीजें भेज देगा। ये व्यापारी नई-नई रीति से कपड़ा बनाने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। लीड्स में पहले ही से सूत कातने की प्रथा चली आ रही है। कारखाने केवल कपड़ा बुनने का काम करते हैं। यहाँ रेशम, कालीन, ऊन का काम करते हुए भी लोग मिलेंगे। यह सुनकर आपको आश्चर्य होगा कि रूस की अलसी से छालटी का अच्छा-से-अच्छा कपड़ा यहीं बनता है। बंगाल से भेजा हुआ पाट रेशम का सामना करता हुआ अकड़ता फिरता है। नंगा जाता है और आभूषित एवं संस्कृत होकर मातृभूमि में पधारता है।

लीड्स में जो रङ्ग-विरङ्गे बर्त्तन देख रहे हैं, उसका काम पहले भी यहीं पर होता था। आज-कल यह फिर इस कला में प्रवीण हो गया है। यहाँ पहले हाथ से कपड़ा

बनाया जाता था; परन्तु आज-कल इतने कल कारखाने हो गये हैं कि हाथ से काम करने पर कुछ भी लाभ नहीं रह गया है। अतएव वास्तविक कला का लोप सा हो गया है। यहाँ टोपी बनाने के अधिक कारखाने मिलेंगे। यहाँ चमड़ा पकाकर जूता बनानेवाले बहुत से लोग मिलेंगे। इस कला में संयुक्त-राज्य में कोई शहर इसके सामने नहीं ठहर सकता।

अब तक तो आपने बाजार की सैर की है। आइये, अब हम आपको धार्मिक और शिक्षा-सम्बन्धी संस्थाएँ दिखाकर यात्रा समाप्त करें। यदि आप शहर के कोने-कोने घूम आवें, तो कुल १८१ गिरजाघर पायेंगे जो भिन्न-भिन्न मतावलम्बियों की अध्यक्षता में धर्म का प्रचार करते हुए मिलेंगे। उसी प्रकार यह शिक्षा का भी स्थान है। यहाँ सैंतालीस पाठशालाओं में लगभग तीस हजार लड़के पढ़ाये जाते हैं। यार्कशायर कालेज उच्च शिक्षा के लिए सबसे प्रधान है।

आपको बहुत-सी ऐसी संस्थाएँ मिलेंगी जहाँ बड़े-बड़े विद्वान् तर्क, दर्शन और विज्ञान की उन्नति में लगे हुए हैं।

इस प्रकार लीड्स यार्कशायर के लिए उतना ही प्यारा है जितना मैनचेस्टर।

नार्थ स्टैफर्डशायर

केवल शहरों को देखते-देखते आपका दिल ऊब गया होगा। अतएव आपको ऐसी उपयोगी वस्तु का वर्णन

सुनाऊँगा जिसको देखकर आप आश्चर्य में आ जायेंगे कि ऐसी सुन्दर चीज चतुर कारीगर के हाथ में ऐसी खराब मिट्टी पड़ने से भी तैयार हो गई। आप लीड्स से गाड़ी पर सवार होकर नार्थ स्टैफर्डशायर में चले आइये जहाँ का बना हुआ चिनी मिट्टी का सामान उपयोगिता तथा कला की दृष्टि से सर्वोत्तम माना जाता है। यहाँ जो सामान पतला तथा पारदर्शक रूप में बनाया जाता है, उसके लिए कार्नवाल में पाई जानेवाली एक विशेष चिकनी मिट्टी का ही उपयोग किया जाता है। विविध प्रकार के पदार्थों के निर्माण में इस मिट्टी के साथ अन्य कई प्रकार के पत्थरों का मिश्रण किया जाना आवश्यक है। इसी मिश्रण पर उन पदार्थों के गुणावगुण का आधार है। अपार-दर्शक सामान के निर्माण में इस मिट्टी के साथ चकमक पत्थर और डेवन में पाई जानेवाली मुलायम मिट्टी का एक विशेष परिमाण में मिश्रण किया जाता है। इसी परिमाण पर इन पदार्थों की उपयोगिता निर्भर है। कौन सा परिमाण किसी विशेष पदार्थ को उपयोगिता के लिए सर्वोत्तम है, इसका निर्णय वैज्ञानिक अनुभव द्वारा किया जाता है।

सबसे पहला काम होता है इन विविध प्रकार के पत्थरों और मिट्टियों को शुद्ध करके चूर्ण करना। इस प्रयोजन के लिए ये पदार्थ कई बार पानी से धोकर पीसने वाली चक्कियों अथवा अन्य प्रकार की मशीनों की सहायता से पूर्णतया चूर्ण कर लिये जाते हैं। दूसरी क्रिया में इन विविध प्रकार के

पदार्थों को उचित परिमाण में मिलाकर पानी की सहायता से एकत्र कर लिया जाता है। ऐसा करने से यह सम्मिश्रण एक गाढ़ा रूप धारण कर लेता है। इस गाढ़े सम्मिश्रण को विविध आकृतियों के रूप में ढालने के लिए साँचों का उपयोग किया जाता है। ये साँचे 'प्लास्टर आफ पेरिस' के बने हुए होते हैं। इनके भीतर पदार्थों की आकृति बनाकर यह मिट्टी का घोल भरा जाता है। इन सांचों को थोड़ी देर रखने के पश्चात् खोल दिया जाता है और कच्चा तथा गीला पदार्थ निकाल लिया जाता है।

कुछ पदार्थ ऐसे भी होते हैं, जिनके निर्माण में साँचों का उपयोग नहीं होता और सब काम हाथ से ही किया जाता है। इस काम के लिए हमारे देश के कुम्हारों की तरह चाक की आवश्यकता पड़ती है। एक व्यक्ति इस काम पर लग जाता है। वह आटे की तरह पानी में सनी हुई मिट्टी से पहले किसी पदार्थ की आकृति का निर्माण करके फिर उसे धीरे-धीरे अस्त्रों की सहायता से ठीक कर देता है। किसी भी पदार्थ के बनाने में जितनी मिट्टी की आवश्यकता पड़ती है वह एक सहायक के द्वारा तौलकर दे दी जाती है। ऐसा करने से एक-जैसे पदार्थों में समता रहती है। जब यह क्रिया उक्त रीति द्वारा सम्पन्न हो जाती है अथवा सब पदार्थ साँचे की सहायता से बना लिये जाते हैं, तब इन्हें गरम कमरों में सुखाने के लिए रखा जाता है। यह क्रिया एक स्थिर तथा पूर्व-निश्चित

ताप-क्रम पर ही की जाती है। ज़रा-सा सूख जाने पर इन्हें उलटनेवाले के पास भेजा जाता है। वह इन पदार्थों को लेथ नामक यन्त्र की सहायता से बाहर के सब भागों को यथा-विधि ठीक बना देता है। जो भी काट-छाँट की आवश्यकता होती है, वह सब इसी व्यक्ति के द्वारा सम्पन्न की जाती है। इन पदार्थों को तब हैण्डलिंग विभाग में भेजा जाता है।

इस विभाग में काम करनेवाली प्रायः स्त्रियाँ ही होती हैं जिन्हें हैण्डिलर (Handler) कहा जाता है। उनका काम यह होता है कि प्याले या और चीजों में—जिनमें जरूरत जान पड़े—हैण्डिल लगा देवें। ये विशेष अंग पहले अलग तौर पर साँचे में ढालकर बनाये जाते हैं और पीछे से उचित स्थानों पर पानी की सहायता से जोड़ दिये जाते हैं। इस विभाग में हैण्डिल को जोड़ने में विशेष सावधानी से काम करना पड़ता है, ताकि यह अंग पीछे से टूटकर उस पदार्थ को निकम्मा न कर देवे।

इसके पश्चात् इन सब पदार्थों को पहली आँच के लिए सगर नामक एक विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्त्तनों में भरा जाता है। सगर के बनाने के लिए विशेष दक्ष मनुष्यों को ही लगाया जाता है। यदि सगर की उपादान मिट्टी का संशोधन भली प्रकार न किया गया हो, तो गन्धक आदि पदार्थ जलने पर सगर-स्थित पदार्थों में घुलकर उनकी आकृति बिगाड़ देते हैं। ऐसा होने से प्रायः पदार्थ भद्दे, विषम

और खराब हो जाते हैं। एक भट्ठी में प्रायः २५०० से ५००० तक बर्त्तन रखने की गुञ्जाइश रहती है। इसके लिए पाँच-छः व्यक्ति लगातार तीन-चार दिनों तक इन पदार्थों को ठीक विधि से सगर में भरते रहते हैं।

इन पदार्थों को पकाने के लिए एक विशेष प्रकार की भट्ठी में नियत तापक्रम का स्थिर रखा जाना आवश्य है। प्रायः कोयला डालने के लिए इन भट्ठियों के दरवाजों की संख्या सात से नौ तक होती है और इसे एक बार जलाने में लगभग दस टन कोयला खराब हो जाता है। साधारण बर्त्तन आदि पकाते समय ३६–६० घण्टे तक लगातार जलाये रखना पड़ता है। कभी-कभी यह समय बहत्तर घण्टे तक भी पहुँच जाता है। पूरी तरह पक जाने पर भट्ठी को ठण्डा करके सगर बाहर निकाल दिये जाते हैं। इनमें से कई पदार्थ बिगड़ जाते हैं। दूसरी बार पकाये जाने से पूर्व इन सबकी छुँटाई की जाती है, ताकि खराब और दोष-पूर्ण पदार्थ निकाल दिये जायँ।

इन भली प्रकार छाँटे हुए पदार्थों को 'डिपिंग हाउस' (Dipping House) में भेज दिया जाता है। इस विभाग के कार्यकर्त्ता को डिपर्ज (डुबाने वाला) कहते हैं। यहाँ पर बर्त्तनों के ऊपर दिये जाने वाले चमकीले लेप के भरे हुए टब पड़े होते हैं। इस लेप को बर्त्तनों पर चढ़ाकर पकाये जाने पर शीशे की तरह चमक आ जाती है। इस लेप पर किसी अन्य पदार्थ का साधारणतया कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। इस

विभाग में नियुक्त स्त्रियाँ बर्त्तनों को उठाकर डिपर्ज के हाथ में देती जाती हैं। यह बर्त्तन इस अवस्था में स्पञ्ज की तरह शोषक होते हैं। पानी में घुले हुए लेप के टब में डुबाये जाने पर लेप का मसाला इसके शरीर में घुस जाता है। इस प्रकार लेप न करके इन पदार्थों को सगर में एक बार फिर भर कर दूसरी बार पकाये जाने के लिए भट्ठी की ओर भेज दिया जाता है।

इस क्रिया को चमक के लिए पकाया जाना (Glost Firing) कहते हैं। पहले की भाँति ही सब सगर को मिट्टी में एक दूसरे के ऊपर रख कर आग जला दी जाती है। इस बार तापक्रम पूर्ववत् नीचा होने के कारण आग पहले से कम समय के लिए ही जलाते हैं। फिर भी लगभग आठ टन कोयला व्यय हो जाता है। निश्चित तापक्रमवाले पदार्थों को तीस-तैंतीस घण्टे तक पकाकर फिर भट्ठों को ठण्डा होने दिया जाता है। सब बर्त्तनों को निकाल कर टूटे-फूटे पदार्थों की छूँटाई फिर से की जाती है। इसी समय विविध श्रेणियों के पदार्थों को अलग किया जाता है। एक बार की भट्ठी में से लगभग ३००० दर्जन बर्त्तन निकल आते हैं। इसलिए इनको भली भाँति रखने के लिए माल-गोदाम का निर्माण किया जाता है। इन पदार्थों को छाँटने का काम प्रायः स्त्रियों से लिया जाता है। यह क्रिया आठ-दस बार की जाती है, ताकि पदार्थों के विभाजन में किसी तरह की अशुद्धि न रह जावे। जो पदार्थ सादे रूप में ही बेचे जाते हैं, उन्हें यहीं से पैकिंग

विभाग में भेज दिया जाता है। दूसरे प्रकार के पदार्थों को चित्रण-विभाग में भेज दिया जाता है। इसमें कई विधियों से वर्त्तनों को सजाया जाता है—

(१) चित्र तथा प्राकृतिक दृश्यों को ताँबे की स्लेट पर से उतार कर कागज की सहायता से बर्तनों तथा खिलौनों पर नकल किया जाता है।

(२) इसमें पदार्थों पर सुनहरी तथा अन्य रंगों की लकीरें आदि खींची जाती हैं। कभी-कभी यह क्रिया पहली बार पकाये जाने के पश्चात् और लेपन के पहले ही की जाती है।

(३) लीथो (छापे) की विधि सबसे सुगम होती है। साधारण चित्र की तरह नाना प्रकार के चित्र एक विशेष प्रकार की स्याही से छापे जाते हैं। इनको साइजेज् अथवा विशेष प्रकार की माया की सहायता से रगड़ कर बर्तनों पर उतार लिया जाता है। पकाते समय इन चित्रों पर साबुन लगा दिया जाता है, ताकि आग से कुछ दोष न आने पावे।

(४) वायु-चित्रण की विधि द्वारा विविध रंगों को घोल के रूप में तङ्ग नली वाली शीशियों में भर कर दबाई हुई हवा के वेग से बर्तनों पर छिड़का जाता है। इस काम के लिए बड़े सिद्धहस्त चित्रकारों को नियुक्त किया जाता है। ऐसे पदार्थों का मूल्य सबसे अधिक होता है।

(५) मुलम्मे की क्रिया द्वारा सब पदार्थों पर सुनहला काम किया जाता है। पदार्थों को एक घूमने वाले पट पर रखकर ब्रुश की सहायता से यह काम किया जाता है।

इस प्रकार सजावट हो चुकने पर इन पदार्थों को एक बार फिर भट्ठी में पकाने के लिए रखा जाता है। इस बार सगर का व्यवहार नहीं किया जा सकता। पचीस-तीस हण्डरवेट कोयले से लगभग बारह घण्टे के लिए ही आग जलाई जाती है। पदार्थों को एक दूसरे से चिमटने से रोकने के लिए मिट्टी के त्रिकोण का व्यवहार किया जाता है। जल चुकने पर ठण्ढा करके सब पदार्थों को बाहर निकाल कर फिर छाँटा जाता है। अन्त में यह सब पदार्थ तैयार करके मालगोदाम में भेज दिये जाते हैं।

आशा है, अब आपकी समझ में आ गया होगा कि आपका प्याला और तश्तरी किस प्रकार बनकर किन-किन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके प्राण-भिक्षा के लिए आपके पास पहुँचा है। एक प्रकार के कार्यालय का सविस्तार वर्णन जान कर ज्ञात हो गया होगा कि कपड़ा, अस्त्र-शस्त्रादि के कार्यालयों में किन विचित्रताओं के साथ काम किया जाता है। भारत में इन सब कलाओं में निपुणता का अभाव है।

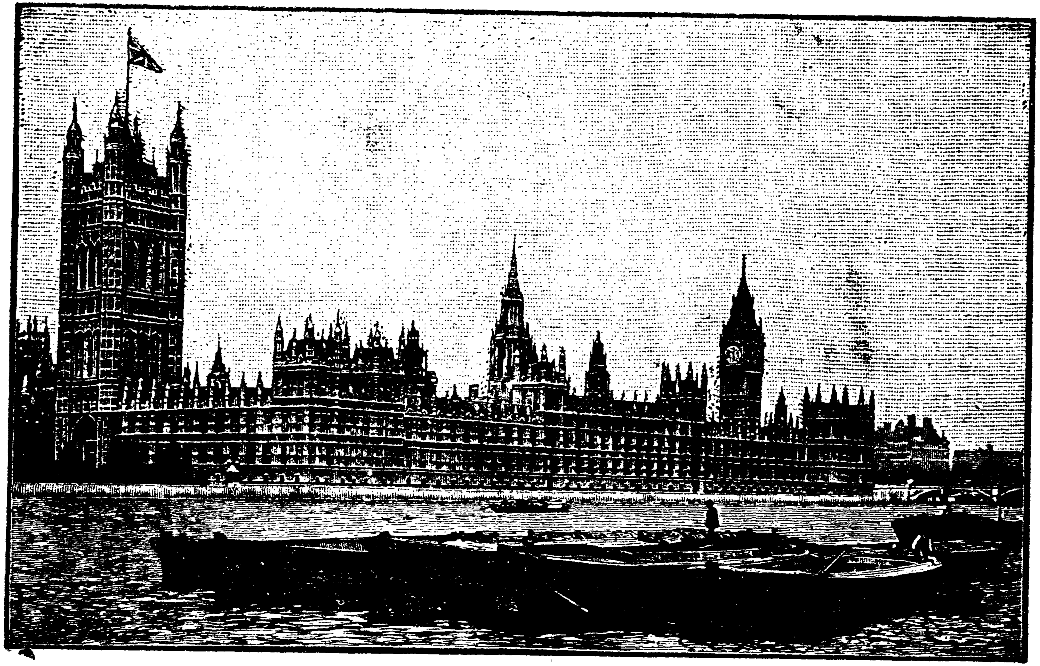
एडिनबरा

आप इङ्गलैण्ड के उत्तर स्काटलैण्ड की राजधानी एडिनबरा का भी दृश्य देख लीजिये। यही वह स्थान है जिसकी बादशाही विधि-शाला कैल्ट पहाड़ी के रमणीक स्थान में बनी हुई है। इसका दृश्य देखते ही मन लुब्ध हो जाता है। इस नगर की प्राकृतिक छटा का अनुमान इतने

ही से कर सकते हैं कि यह चारों ओर पहाड़ियों से—जो खाइयों के कारण विभक्त हो जाती हैं—घिरा हुआ स्थान है जो अपने ढङ्ग के सौन्दर्य में अद्वितीय है। आपने ऐसा नगर अभी तक नहीं देखा था जिसके दक्षिण-पूर्व में जङ्गली-पहाड़ी प्रान्त हो, उत्तर में फोर्थ नदी का फर्थ हो और प्रकृति की गोद में खेलता हुआ सदा से बादशाहों का ग्राम रहा हो। यहाँ पर प्राचीन काल के बने हुए स्टार्लिङ्ग, राक्सबर और बरविक मिलेंगे। लेथ के बन्दरगाह पर गिरजाघर का कालेज देख पड़ेगा।

आगे बढ़कर आपको 'होली रूड पैलेस' (राजभवन) मिलेगा। लिनलिथगाउ राजभवन में प्राचीन फव्वारे को नवीन सुन्दर फव्वारे के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। यह होली रूड की बाहरी कचहरी के मध्य में स्थित है। न्याय के उच्चाधिकारी पार्लियामेण्ट हाउस में एकत्र होते हैं। इसका हॉल बहुत बड़ा है, छत सागौन की बनी हुई है। इसके पास एडवोकेट का कमरा और सिगनेट का पुस्तकालय है। प्रिन्स स्ट्रीट के पूर्वी भाग पर हरएक सामान को सुरक्षित रखने के उत्तरदायित्व का कार्य होता है। यहाँ पर सबके जीवन-मरण और विवाह आदि का हिसाब रखा जाता है।

रायल इन्स्टीट्यूशन में व्यापार, शिक्षा, कला, मछली आदि के शिकार का विभाग है। यहाँ समस्त राष्ट्र के विज्ञान, कला, संस्कृति, इतिहास और भूगोल आदि विद्याओं



पार्लियामेंट भवन

का केन्द्र है। ऐराटीकयूरीज का राष्ट्रीय अजायबघर दर्शनीय है। एडिनबरा का विश्वविद्यालय आपको निराला ही मिलेगा। यह सन् १५८२ में स्थापित किया गया था। यह सेराटमेरी गिरजाघर के स्थान पर बनाया गया है। इसका क्षेत्रफल वृहत् है। यहाँ पर अलग-अलग विभाग बने हुए हैं। संसार के दूर-दूर देशों से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते हैं। इसके समान वास्तव में और विश्वविद्यालय नहीं हैं। यहाँ दिन-दिन नए कालेज बनते जा रहे हैं।

अब आपकी यात्रा समाप्त हो गई। यहाँ लीब के बन्दरगाह पर जहाज मिलेगा। उससे सामुद्रिक यात्रा करके आप फिर कैले आ गए, जहाँ से पूर्ववत् यात्रा कीजियेगा।

बारहवाँ दृश्य

यात्रा

मैंने आपको बतलाया था कि यदि आपके पास धन है, तो आप आँग्लदेश की यात्रा कर सकते हैं, अन्यथा उसका वर्णन किताबों में पढ़ कर ही सन्तोष कर सकते हैं। आपके पढ़ने के लिए मैंने अपनी पूरी यात्रा कह सुनाई। अब यह प्रश्न उठता है कि मैंने घर-बार छोड़ कर इतनी यात्रा क्यों की, या आपने अब तक घर की चिन्ता छोड़ कर यह मानसिक यात्रा क्यों की?

आजकल जिसके पास धन हो वह दुनिया-भर की यात्रा कर सकता है। यदि किसी को अधिक व्यय मालूम हो, तो वह भिन्न-भिन्न देशों तथा उनके निवासियों का वर्णन पढ़ कर ही कल्पित यात्रा कर सकता है। विचारना यह है कि इससे क्या लाभ हो सकता है; क्योंकि मनुष्य जो कुछ करना चाहता है, वह अपनी भलाई के लिए। इसका कारण यह है कि हम सभी किसी विशेष परिस्थिति में पाले-पोसे गये हैं। हम लोग जो कुछ सुनते या देखते हैं वैसा ही करते हैं और हमारी धारणा भी वैसी ही हो जाती है। हमें अपने ही

देश और रीति-रस्म का अभिमान रहता है। जिस मनुष्य ने कोई दूसरा देश नहीं देखा है या अपने आसपास के लोगों के अतिरिक्त दूर के लोगों का व्यवहार नहीं देखा है, उसका ज्ञान सङ्कुचित होता है। वह सोचता है कि मैं ठीक रास्ते पर चल रहा हूँ और वे, जो हमसे भिन्न तरह से रहते हैं, पतित और नरक के भागी हैं। ऐसे जीवन से कोसों दूर रहना चाहिये; क्योंकि संसार में जितने बड़े आदमी हो गये हैं, उन सब में सहृदयता का भाव था। यह तो केवल मूर्खता है कि हम अपने को ठीक और संसार के शेष मनुष्यों को गलत समझें। हमारा कर्त्तव्य सबकी सहायता करना है।

जब संसार की सभी जातियाँ दूर-दूर रहती थीं, स्वतन्त्र थीं; तब उनमें किसी प्रकार का परस्पर-सम्बन्ध नहीं था। आज वह समय नहीं रह गया। सभी एक दूसरे के पड़ोसी बन गये हैं। जल, स्थल एवं आकाश का रास्ता खुल जाने से पहले का पाताल अब घर बना हुआ है। संसार के भिन्न-भिन्न देशों में उन्नत व्यापार का सम्बन्ध जुड़ गया है। एक देश के व्यवसायों की उन्नति के लिये दूसरे देश का धन लग रहा है। एक देश आवश्यक वस्तुएँ बनाता है; दूसरा उनको खरीदता है; एक खाद्य पदार्थ पैदा करता है तो दूसरा उसे खाता है। कोई राष्ट्र या देश सबसे अलग होकर उन्नति नहीं कर सकता। भारतवर्ष में अकाल पड़ने का, अमेरिका में भूकम्प आने का, यूरप में उत्पात होने आदि का प्रभाव पृथ्वी के हर-एक भाग पर पड़ता है। इस प्रकार संसार तभी

उन्नति कर सकता है—सुखी रह सकता है, अब इसके अन्यान्य खण्ड भी किसी प्रकार की दुर्घटना से पीड़ित न हों।

हमने आप से कहा कि एक देश के व्यवसाय को बढ़ाने के लिए दूसरे देश का धन व्यय होता है। यह पढ़कर शायद आपको आश्चर्य होगा कि यह कहाँ की ऊटपटाँग बातें घुसेड़ दी गई हैं। विचारने पर आपको इसकी सत्यता ज्ञात होगी। थोड़ी देर के लिए मान लीजिये कि आपने यह सोचा कि यदि इस प्रान्त में एक रेलवे बन जाती, तो यहाँ की कृषि में उन्नति होती और इस प्रकार देश सुखी हो जाता, किन्तु इतने बड़े खर्च को हाथ में लेने के लिए आपके पास पर्याप्त धन नहीं है। इसलिए आप दूसरे देश से लिखा-पढ़ी करेंगे कि हम लोग इस प्रांत में अमुक लाभ के लिए रेलवे खोल रहे हैं, कृपा करके आप इतना रुपया उधार दीजिये; उसमें जो कुछ लाभ होगा, आपको भी हिस्सा दिया जायेगा। दूसरे देश वाले रेलवे में पूँजी लगायेंगे और आपको धन देंगे। इसी तरह जब आपके पास धन होगा, तब आप भी दूसरे देश वालों को उससे सहायता पहुँचावेंगे।

इस प्रकार की सन्धि को अन्तर्राष्ट्रीय कोष 'इएटरनेशनल फाइनेन्स' कहते हैं। इस उदाहरण से आप भली भाँति समझ जायँगे कि उन्नति में प्रत्येक देश सम्बद्ध है। अमेरिका की उन्नति से हमारी उन्नति हो सकती है; हमारे धनी होने से इङ्गलैण्ड माला-माल हो सकता है।

अतएव दूसरे देश के विषय में ज्ञान प्राप्त करना हमारे

लिए परमावश्यक है। पहला कारण यह है कि मानव-जीवन का रहस्य समझना हमारा कर्त्तव्य है, दूसरा यह कि अपनी उन्नति के लिए दूसरे वैभवशाली देश का जिस पर हमारी उन्नति निर्भर है—ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

जब हम अन्य राष्ट्रों के रीति-रस्म और उन तक पहुंचने के लिए भीतरी-बाहरी रास्ते जानते हैं; तभी हम उनके परिचय से लाभ उठा सकते हैं। किसी देश का जल-वायु जान कर हम यह समझ सकते हैं कि उसका उस देश के निवासियों के रहन-सहन और अशन-वसन पर क्या प्रभाव पड़ता है। हमें जो वस्तुएँ असम्भव और घृणित जान पड़ती हैं, वे अनुभव से सम्भव और खाद्य प्रतीत होने लगती हैं।

जब एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से प्रेम करता है, विश्वास रखता है और उसकी सहायता करता है; तो वह उसका ज्ञान आसानी से प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार सभी एक हो जायंगे; युद्ध का नाम भी नहीं रह जायेगा; हर-एक देश में शान्ति का साम्राज्य विराजेगा; हर-एक देश एवं वहाँ के निवासियों की उन्नति स्वतः होगी। एक की कला और साहित्य, दूसरे का व्यापार और व्यवसाय, तीसरे का विज्ञान और तर्क सभी एक साथ मानव-सृष्टि की सेवा में तत्पर होंगे। इस प्रकार सारा संसार सुखी और ऐश्वर्यशाली हो जायेगा।

हमें अपने देश की जनता के लाभ के लिए—स्वार्थ का त्याग करके—कुछ न कुछ ऐसा कार्य करना चाहिये जिससे

सृष्टि के काम में सहयोग हो। अब हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम प्रत्येक मनुष्य से—चाहे वह किसी जाति या धर्म का हो—घृणा छोड़कर प्रेम करें और संसार के शेष देशों के विषय में यथाशक्ति ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करें।
